अगस्त 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

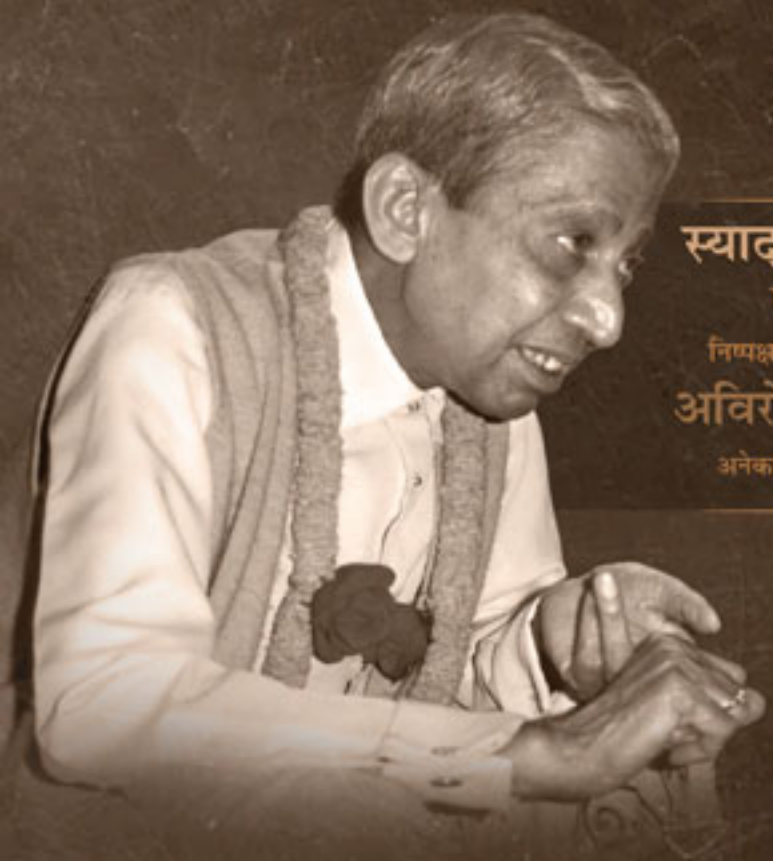

स्याद्वाद वाणी सचेतन वाणी
मालिकी बगैर की वाणी
निष्पक्षपाती वाणी निराग्रही वाणी
अविरोधाभास वाणी सर्वमान्य
अनेकांत वाणी वीतराग वाणी

किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, हर एक का प्रमाण (मान्यता, श्रद्धा) कबूल करे, ऐसी है 'यह' (ज्ञानी पुरुष की) स्याद्वाद वाणी है। स्याद्वाद वाणी वह अंतिम वाणी कहलाती है, टॉप मोस्ट वाणी कहलाती है।

जर्मनी : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 9 से 12 जून 2022

पूज्यश्री का USA सत्संग प्रवास

एटलान्टा : सत्संग - ज्ञानविधि :
ता. 15 से 18 जून 2022

राले : सत्संग - ज्ञानविधि :
ता. 19 से 22 जून 2022

न्यू जर्सी : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 23 से 28 जून 2022

वर्ष : 17 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 202
अगस्त 2022
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

स्याद्वाद वाणी

संपादकीय

हिन्दुस्तान में विविध धर्मों का संगम देखने को मिलता है। यहाँ हमेशा 'हमारा' और 'आपका' ऐसे पक्ष होते दिखाई देते हैं, उसके बावजूद भी वे पक्ष गलत नहीं हैं। अपने-अपने दृष्टिबिंदु के अनुसार हर एक धर्म की मान्यता होती है, जो कुदरती रूप से आयोजित होती है। प्रस्तुत अंक में, परम पूज्य दादा भगवान ने धर्म और अध्यात्म में स्याद्वाद वाणी के सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से गहराई से व्यक्त किए हैं। वे हमेशा कहते थे कि हर एक धर्म अपने-अपने स्टैन्डर्ड के अनुसार सही है, लेकिन समान नहीं है। ये रिलेटिव धर्म हमें कुछ अंश तक डेवेलप करेंगे लेकिन इनसे फुल डेवेलप नहीं हो सकते। मोक्ष के लिए आउट ऑफ स्टैन्डर्ड यानी कि वीतराग धर्म का आराधन आवश्यक है।

जब मतभेद होते हैं तब हर एक को अपना धर्म सही लगता है जबकि अनेकांत में सभी के धर्म सही लगते हैं। यानी कि उसमें समस्त तीन सौ साठ डिग्री स्वीकार होती है। अनेकांत अर्थात् वादी-प्रतिवादी दोनों कबूल (स्वीकार) करें। दादाश्री हमेशा कहते थे कि किसी धर्म के प्रति हमारा मतभेद नहीं है। क्योंकि हम सेन्टर में हैं, इसलिए हमें सभी रेडियस (त्रिज्या) समान लगती है। जो सभी दृष्टिबिंदुओं को समा (समाहित कर) ले ऐसा निष्पक्षपाती, स्याद्वाद वीतराग धर्म है। वीतराग धर्म में वीतराग वाणी किसे कहते हैं कि हर एक धर्म वाले खुश होकर सुनें, किसी को अड़चन न करे, सभी के लिए हितकारी हो। वीतराग वाणी ही स्याद्वाद वाणी है। स्याद्वाद वाणी क्या कहती है? आप ऐसा बोलो कि पाँच लोगों को लाभ हो और किसी को भी दखल न हो, इस वाणी से दुःख का अभाव होता है और हमेशा के लिए आत्यंतिक सुख की अनुभूति होती है।

स्याद्वाद वाणी यानी कि धर्म की बाबत में किसी का भी प्रमाण न दुभे। किसी भी व्यक्ति का दृष्टिबिंदु ज़रा भी न दुभे, ऐसी वाणी अर्थात् स्याद्वाद वाणी। स्याद्वाद वाणी, वह तो हर एक की मान्यता को हेल्प करके उसे पूर्ण सिद्धांत (सेन्टर) की ओर ले जाती है और किसी की भी मान्यता को नहीं तोड़ती। स्याद्वाद वाणी ही सबसे बड़ी दुःख निवारक औषधि है। आध्यात्मिक प्रगति का पाराशीशी क्या है? (वह है,) उनकी स्याद्वाद वाणी में झलकती वीतरागता!

स्याद्वाद वाणी के बगैर किसी का भी आत्यंतिक कल्याण नहीं हुआ। इसलिए महात्माओं को ज्ञानी की स्याद्वाद वाणी क्या है वह समझते रहना है। दादाश्री हमेशा कहते थे कि वे खुद चालीस सालों तक नौ कलमों के भाव पुरुषार्थ में ही बरतते थे। उसके परिणाम में (फल स्वरूप) ऐसी स्याद्वाद वाणी प्राप्त हुई है। हमें भी अब नौ कलमों का भाव पुरुषार्थ शुरु करके ऐसे कॉज़ेज़ डालने हैं कि मेरी वाणी से किसी को भी दुःख न हो और सुख ही हो। जिसके परिणाम में धीरे-धीरे सहज स्याद्वाद वाणी प्राप्त हो, ऐसी हृदय से अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

स्याद्वाद वाणी

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

स्याद्वाद वाणी की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : मनुष्य (अध्यात्म में) कितनी डिग्री तक पहुँचा है, वह कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : उसकी वाणी से पता चलता है। जब तक 180 डिग्री तक पहुँचता है तब तक कुछ प्रभाव नहीं पड़ता उसका। वह तो जब 300 डिग्री पर आता है तब कुछ बात बनती है। अंत में 360 डिग्री पर पहुँचना है। वाणी वीतरागी हो, उसमें राग-द्वेष न हो, ऐसी वाणी हो तो उसका प्रभाव पड़ता है।

स्याद्वाद वाणी न हो न, तो वे शब्द कई लोगों के लिए हितकारी हो जाते हैं और कई लोगों के लिए नुकसानदायक हो जाते हैं। और यदि स्याद्वाद वाणी हो तो सभी के लिए हितकारी हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद वाणी किसे कहते हैं?

दादाश्री : किसी भी व्यक्ति का दृष्टिबिंदु न दुभे, इस तरह वाणी निकले, उसे स्याद्वाद वाणी कहते हैं।

अपने यहाँ पर सभी ज्ञाति के (लोग) आए हो, सभी तरह के, अनपढ़, पढ़े-लिखे लेकिन उनमें से किसी का भी प्रमाण न दुभे, उसे स्याद्वाद वाणी कहते हैं।

स्याद्वाद वाणी उसे कहते हैं, कि हर एक धर्म वाले खुश होकर सुनें, सभी को अच्छी लगे। वृद्ध स्त्री हो जो गुजराती पढ़ी-लिखी नहीं है, उन्हें भी अच्छी लगे। डेढ़ साल के बच्चे को भी अच्छी लगे, भले ही वह समझता न हो, लेकिन उसे भी अच्छी लगे तो जानना कि यहाँ यथार्थ धर्म है और स्याद्वाद वाणी है। डेढ़ साल के बच्चे उठकर यदि चले जाए और पाँच साल के बच्चे रोने लगे तो जानना कि यहाँ सही मार्ग नहीं है। यहाँ तो वातावरण ही आनंद वाला होता है। बच्चे जाते ही नहीं। समझ में आया या नहीं आया, उसकी ज़रूरत नहीं है। ज्ञानी पुरुष की वाणी सभी को समझ में आ ही जाती है। सब अपनी भाषा में समझ जाते हैं, उनकी एक्ज़ेक्टनेस में आ जाता है।

प्रमाण न दुभे, वह है स्याद्वाद वाणी

स्याद्वाद वाणी अर्थात् धर्म की बाबत में किसी का ज़रा भी प्रमाण न दुभे, ऐसी वाणी। यानी जहाँ पर स्थानकवासी बैठे हों, देरावासी बैठे हों, दिगंबरी बैठे हों, वैष्णव बैठे हों, मुसलमान बैठे हों, सभी हों लेकिन किसी का प्रमाण न दुभे, उन सभी को एक समान समझ में आए, वह है स्याद्वाद वाणी। भले ही उनका प्रमाण पाँच अंश का हो लेकिन वह प्रमाण नहीं दुभाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न दुभे, तो धर्म का प्रमाण अर्थात् क्या?

दादाश्री : (धर्म का) प्रमाण अर्थात् उसका जो कुछ भी प्रमाण हो वह। कुछ का ज्ञान सौ

प्रतिशत होता है, कुछ का ज्ञान अस्सी प्रतिशत होता है, किसी का सत्तर प्रतिशत होता है, किसी का साठ प्रतिशत होता है, लेकिन साठ प्रतिशत वाले का पैंतालीस प्रतिशत नहीं बोल सकते। साठ प्रतिशत है, उसका यदि पैंतालीस प्रतिशत बोल दिया तो उसका प्रमाण कम हो गया, वह प्रमाण दुभाया कहा जाएगा। जितनी डिग्री का है उतना बोलना चाहिए।

हर एक धर्म सही है, लेकिन समान नहीं है

ये हर एक धर्म हैं वे सभी सही हैं, लेकिन समान नहीं हैं। कोई धर्म, इस बच्चे जितना (छोटा) है, कोई इतना है, कोई बड़ा है। सब से बड़े दो धर्म हैं, एक वेदांत धर्म और एक जैन धर्म। ये दोनों फुल्ली (पूरी तरह से) डेवेलप हो चुके हैं। बाकी सभी फुल्ली डेवेलप नहीं हुए हैं।

अर्थात् हर एक धर्म हैं वे बच्चे से लेकर बुढ़ापे तक के सभी (लेवल के) धर्म हैं, एक डिग्री से लेकर तीन सौ साठ डिग्री तक के धर्म हैं। ये सभी धर्म सही हैं ऐसा कह सकते हैं, लेकिन समान हैं, ऐसा नहीं कह सकते। ऐसा कहने से प्रमाण दुभाया कहा जाएगा। यह समझ नहीं है, इसलिए ऐसा कहते हैं कि सभी धर्म समान हैं। सभी धर्म समान नहीं हो सकते न! सभी धर्मों को समान कहना, वह गुनाह है। समान कहा तब तो फिर उसका कोई अर्थ ही नहीं रहा न! दो, पाँच, दस डिग्री भी समान है और तीन सौ डिग्री भी समान है, ऐसा कह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं कह सकते।

दादाश्री : डिग्री के अनुसार फर्क है। यह धर्म इस डिग्री का है, वह धर्म इस डिग्री का है, ऐसा ख्याल में होना चाहिए। इसलिए यहाँ पर किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दुभता। क्योंकि हमारी स्याद्वाद वाणी है। यह पक्षपाती नहीं है और किसी धर्म का प्रमाण न दुभे, ऐसी है।

'सभी धर्म समान हैं' कहने वाले पर भयंकर मुसीबतें आती है। क्योंकि जो तीन सौ डिग्री के है, सवा तीन सौ डिग्री के है, उन सभी धर्मों की आप हिंसा करते हो! और धर्म, वह ज्ञान है और ज्ञान, वह आत्मा है, अतः वह आत्मा की हिंसा होने के बराबर है। इसलिए (समान) नहीं बोल सकते, एक अक्षर भी नहीं बोल सकते। समान होते ही नहीं, कभी भी समान नहीं होते, एक भाई पूछ रहे थे, 'सभी धर्म समान ही हैं न?' तब मैंने कहा, 'आपके घर के सभी लोग समान हैं?' तब वे कहते हैं, 'उम्र में फर्क है।' मैंने पूछा, 'और कोई फर्क नहीं दिखता?'

और हमें तुलना में नहीं पड़ना है, हो सके तब तक। क्योंकि जिम्मेदारी है न! तुलना करने वाले की जिम्मेदारी नहीं है? 'ये सभी हीरे समान हैं', ऐसा कहे तो? जौहरी ऐसा बोलते हैं कि सभी हीरे समान हैं? जौहरी ऐसा बोलते हैं क्या? नहीं बोलते। क्योंकि जिम्मेदारी है। नासमझ के लिए हर्ज नहीं है। लेकिन फिर भी उसकी जोखिमदारी तो है ही न!

यहाँ सभी स्त्रियाँ जा रही हों, उनमें दो-चार सती जैसी हों, दो-चार ऐसी हों और हम कहें 'सभी समान ही हैं' तो जोखिमदारी है क्या?

प्रश्नकर्ता : अवश्य।

दादाश्री : कैसी जोखिमदारी? यानी कि कोई सती भी नहीं रही और कोई वेश्या भी नहीं रही, सभी समान कही जाएगी। ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो रागी और वीतरागी को समान कर दिया।

दादाश्री : हाँ, सभी को समान कर दिया। उसका कोई अर्थ ही नहीं है न! उसके बजाय न बोले, वह अच्छा है। जोखिमदारी समझे बगैर न बोले, वह अच्छा कहा जाएगा। उसके लिए हमें अभिप्राय नहीं देना चाहिए कि 'सभी खराब हैं या सभी अच्छी हैं।' फिर भी 'अच्छी हैं' बोलोगे तो थोड़ा निभा लेंगे। लेकिन 'खराब' तो बोल ही नहीं सकते। इसी तरह 'ये सभी धर्म समान है', ऐसा कभी भी नहीं बोल सकते।

सभी स्टैन्डर्ड की ज़रूरत है

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ये सभी धर्म समान नहीं है।

दादाश्री : हाँ, सभी धर्म अपने ग्रेडेशन (कक्षा) में सही है। जैसे फर्स्ट स्टैन्डर्ड, सेकन्ड स्टैन्डर्ड, ऐसा कॉलेज तक है, वे सभी सही हैं, लेकिन सभी स्टैन्डर्ड वाले हैं, उसी तरह हर एक धर्म का अपना कुछ स्टैन्डर्ड है। उसमें जो पुनर्जन्म को समझते हैं, वे हायर स्टैन्डर्ड के लोग हैं। हिन्दु और जैन, ये लोग पुनर्जन्म को मानते हैं, यानी कि ये डेवेलप हो चुके हैं। जबकि, जो पुनर्जन्म को नहीं समझते, वे लोग उतने अधिक डेवेलप नहीं हैं।

ये स्टैन्डर्ड कुदरत के आयोजित किए हुए है। यानी कि ये जो पुनर्जन्म को नहीं मानते न, वे धर्म वाले भी सही हैं। वे अपने स्टैन्डर्ड में बिल्कुल करेक्ट (सही) हैं। इससे ज्यादा आगे जाना उनके लिए भूल वाला है। जब यहाँ पर आता है तब डेवेलप हो चुका होता है पुनर्जन्म को समझने लगा है। और डेवेलप हुआ इसलिए मुक्ति के मार्ग पर आता है।

सभी अपनी-अपनी तरह से सही ही हैं। किसी को गलत मानना ही नहीं है। हर एक धर्म वाले अपने धर्म के लिए ऐसा ही कहते हैं कि 'हमारे जैसा उत्तम धर्म कोई और नहीं है।' यदि ऐसा नहीं कहेंगे तो लोग दूसरे धर्म में चले जाएँगे और वास्तव में वह हैं सेकन्ड में, सेकन्ड का व्यक्ति मेट्रिक में बैठ जाए उसके जैसा हो जाएगा उसे। और ये सभी संप्रदाय ऐकांतिक कहलाते हैं। ये सभी आग्रह लेकर बैठे हैं कि इस अनुसार ही!

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'हम ही सही हैं', ऐसा आग्रह तो नहीं रख सकते न?

दादाश्री : आग्रह रखते हैं, इसलिए फिर उसकी मार पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : उन लोगों ने जो आग्रह रखे होते हैं, वे तो सभी व्यर्थ ही हैं न?

दादाश्री : नहीं, वे आग्रह करते-करते ही स्टैन्डर्ड में आगे बढ़ते हैं। अत: इस जगत् में कोई गलत नहीं है। सब अपनी-अपनी जगह पर शोभायमान हैं।

अब, उन लोगों को निकालने जैसा नहीं है। क्योंकि सारे धर्म हैं, वे कोई गलत नहीं हैं और हर एक स्टैन्डर्ड की ज़रूरत है। फिर लोग कॉलेज में आने के बाद क्या कहते हैं? कहते हैं, 'अरे, यह बालमंदिर और इस फर्स्ट स्टैन्डर्ड और सेकन्ड स्टैन्डर्ड और मेट्रिक तक का क्या काम है? इस फर्स्ट स्टैन्डर्ड, सेकन्ड स्टैन्डर्ड... इन सभी को निकाल दो न!' अरे, वहीं से तू आया है! अब दूसरे लोगों को आने के लिए वह सब नहीं चाहिए? यानी इन सभी स्टैन्डर्ड की ज़रूरत है, स्टैन्डर्ड में पास होते हैं वैसे-वैसे आगे आते हैं। जैसे कि ग्रेज्युएट होना हो तो फर्स्ट स्टैन्डर्ड में बैठता है, वह बैठते-बैठते आगे बढ़ते-बढ़ते आता है। उसी तरह ये संप्रदाय, वे स्टैन्डर्ड हैं, उनकी ज़रूरत है। लेकिन प्योरिटी चाहिए।

अत: ये जितने उपदेशक हैं उन सभी की ज़रूरत है। ये तो कहेंगे, 'सभी स्टेशनों को निकाल दो।' लेकिन सभी स्टेशन हैं इसलिए तो रेल्वे कहलाती है! और रेल्वे है इसलिए तो तू यहाँ आया है! तब वह कहता है, 'नहीं, अब ऐसा नहीं चाहिए।' लेकिन ऐसा चलता होगा? यानी सभी धर्मों की ज़रूरत है, सभी स्टेशनों की ज़रूरत है, पूरी रेल्वे लाइन की ज़रूरत है! लेकिन जिसे उस धर्म में रास नहीं आता हो, वह इसमें आगे आता है। जिसे खुद के धर्म से संतोष न होता हो, जिसे बंधन पसंद न हो, वह आगे आता है। उस स्टैन्डर्ड के लोगों को किस तरह से आगे बढ़ें, उन्हें ऐसा उपदेश देने की ज़रूरत है।

अध्यात्म, हृदयमार्गी वालों के लिए

कोई धर्म समान नहीं है। कोई एक सौ साठ डिग्री का, कोई एक सौ अठावन डिग्री का, कोई एक सौ चालीस डिग्री का है। अब, इसमें जो हृदयमार्गी मार्ग हैं, वे सभी अध्यात्म की ओर जा रहे हैं। और जो बुद्धिमार्गी मार्ग हैं न, वे अध्यात्म नहीं हैं, वे योगिक मार्ग में हैं। वे योगिक मार्ग तो मनोयोग तक गए हैं। इससे आगे कोई है ही नहीं। अर्थात् वह स्थिरता करने के लिए अच्छा रास्ता है। लोगों को जिन स्टैन्डर्ड की ज़रूरत है, वे सभी स्टैन्डर्ड हैं। क्योंकि एक स्टैन्डर्ड में पूर्ण नहीं होगा तो फिर आगे कैसे बढ़ेंगे? यह सारा जगत् प्रवाह है और इसमें स्टैन्डर्ड बन गए हैं। (ये स्टैन्डर्ड) और पंथ तो लोगों द्वारा बनाए हुए हैं। कोई कहता है, 'मेरा सही है', तब कोई कहता है, 'मेरा सही है'। यह कहता है, 'मेरा सही है'। इस तरह सभी पंथ बन गए हैं और 'ज्ञानी पुरुष' सभी को एक कर देते हैं। ज्ञानी सब को एक करते हैं और लोग अलग करते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह संसार अनादि से चला आ रहा है, इसमें इतने अधिक धर्म के पंथ क्यों हैं?

दादाश्री : ये सभी लोग बैठे हैं, वे एक ही जगह पर बैठ सकते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं बैठ सकते।

दादाश्री : सब अपनी जगह पर होते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : इसी तरह इन सभी को अपनी-अपनी जगह के अनुसार, जहाँ वह खड़ा है वहाँ वैसा धर्म उसे मिल जाता है। जो-जो स्टैन्डर्ड है न, वह उसकी स्पेस के अधीन है। कुछ स्पेस के लोग वे कुछ स्टैन्डर्ड में ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : अंत में सभी स्टैन्डर्ड को छोड़ना पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ, आगे बढ़ते-बढ़ते स्टैन्डर्ड के बाहर निकलना पड़ेगा। कभी न कभी अनेकांत होना पड़ेगा। बाकी जगत् पूरा एकांतिक वाणी में है।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हो न, तीसरी सीढ़ी हो और ऊपर जाना हो तो उस सीढ़ी को छोड़ना ही पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, उसे तो छोड़ना ही पड़ेगा। तब भी कुछ लोग कहते हैं, 'मैं सीढ़ी को साथ में लेकर आऊँगा।' तब मैं कहता हूँ, 'अरे, ऐसे नहीं आ सकते!'

'सेन्टर' में मतभेद नहीं

प्रश्नकर्ता : तो धर्मों में इतनी अधिक भिन्नता क्यों है?

दादाश्री : भिन्नता है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, एक मत के अनुसार आत्मा अनेक है, एक मत के अनुसार आत्मा एक है, एक मत के अनुसार आत्मा और प्रकृति वे दोनों एक ही है।

दादाश्री : वे सभी स्टैन्डर्ड के भेद हैं। यह वस्तु सेन्टर में है और ये तीन सौ साठ डिग्रियाँ हैं। अब, इस सेन्टर की वस्तु को आप यहाँ इस डिग्री पर रहकर देखो तो आपको जो दिखाई देगा और दूसरा व्यक्ति उस डिग्री पर रहकर देखे, तो उसमें फर्क दिखाई देगा या नहीं दिखाई देगा?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देगा।

दादाश्री : हर एक डिग्री वाले को फर्क दिखाई देगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : क्यों? वस्तु तो एक ही है लेकिन अपनी-अपनी डिग्री से देख रहे हैं। इसलिए इसका और उसका मतभेद है। ऐसा हर एक को मतभेद है। आपको समझ में आ रही है यह बात? अत: हर एक को मतभेद है या नहीं है?

प्रश्नकर्ता : मतभेद हो सकता है।

दादाश्री : इसी तरह, वस्तु एक ही है लेकिन इन सब का अपनी-अपनी समझ से मतभेद है। यह समझ में आ रहा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अब, मैं सभी जगह घूमकर यहाँ सेन्टर में आ गया, तो मेरा किसी के साथ मतभेद ही नहीं है। क्योंकि मैं सेन्टर में आ चुका हूँ। मैं हर एक डिग्री को पहचानता हूँ। आप कहाँ से बोल रहे हो, वह मैं समझ गया। आप डेढ़ सौ डिग्री पर हों और एक सौ अस्सी डिग्री वाला आपसे कहे कि, 'आपका गलत है' तब आपका मतभेद होगा। अत: मैं आपसे क्या कहता हूँ? कि 'आप एक सौ अस्सी डिग्री पर जाओ' और एक सौ अस्सी डिग्री वाले को डेढ़ सौ डिग्री पर बुलाऊँ तब आप कहोगे कि 'नहीं, करेक्ट है।' दुनिया में किसी जीव के साथ मेरा मतभेद नहीं है। क्योंकि दो साल का छोटा बच्चा यदि नंगा घूम रहा हो तो उसे गलत कह ही नहीं सकते। और पच्चीस साल का नंगा घुम रहा हो तो?

प्रश्नकर्ता : गलत कहा जाएगा।

दादाश्री : हाँ, इसी तरह हर एक का स्टैन्डर्ड है।

संप्रदाय अर्थात् स्टैन्डर्ड

प्रश्नकर्ता : इतने सारे जो संप्रदाय हैं, वे थोड़े बहुत अंश तक तो अपने तौर पर सही हैं न?

दादाश्री : सही हैं। लेकिन भीतर से फल क्या आया? इस हिन्दुस्तान की जो दशा है, वही न! एक भी व्यक्ति चिंता रहित हुआ हो उसे ढूँढ़कर बताओगे? चिंता रहित या अहंकार रहित हो, ऐसा कोई व्यक्ति दिखाओगे? यह तो सब उल्टा ही चित्रण किया और उल्टा ही किया! वह तो फिर हर एक की प्रकृति के आधार पर उसका स्टैन्डर्ड बन जाता है। प्रकृति के समूह सारे इकट्ठे हो ही जाते हैं न?

संप्रदाय किसे कहते हैं? कि खुद एक तरह का आग्रह तय करे कि भाई, इस अनुसार इतनी ही बाउन्ड्री, इस अनुसार वर्तन करना है, आचार और वह सब वहाँ नियमन किया हुआ होता है। यानी एक तरह का तय किया हुआ अभिप्राय कि 'इतने ही ध्येय में रहना है, इससे ज्यादा नहीं।' सीमित ध्येय! हाँ, कुछ इतना ही भाग यानी स्टैन्डर्ड!

संप्रदाय अर्थात् स्टैन्डर्ड। फर्स्ट स्टैन्डर्ड, सेकन्ड स्टैन्डर्ड, थर्ड स्टैन्डर्ड। संप्रदाय के बगैर संप्रदाय रहित (आउट ऑफ स्टैन्डर्ड) नहीं हो सकता। संप्रदाय में से आते-आते संप्रदाय रहित होने की ज़रूरत है। सीधा संप्रदाय रहित नहीं हो सकता।

संप्रदाय के स्टैन्डर्ड से डेवेलपमेन्ट

प्रश्नकर्ता : (हर एक संप्रदाय में) धर्म के जो एकता सम्मेलन होते हैं, उनके बारे में आपका क्या अभिप्राय है?

दादाश्री : ऐसा है न, उसकी 'ज़रूरत नहीं है', ऐसा बोलना, वह गुनाह है। 'ज़रूरत है', ऐसा बोलना, वह भी गुनाह है। ऐसी चीज़ है यह। क्योंकि *खेंच* (आग्रह) तो चलती ही रहेगी। हर एक धर्म के अपने सम्मेलन और ऐसा सब रहेगा ही। यानी कि ये इस तरफ खिंचेंगे तब वे उस तरफ खिंचेंगे। यह चलता ही रहेगा। ये अभिप्राय हैं एक तरह के, दोनों के। इसमें बिल्कुल संप्रदाय रहित नहीं हो सकते, सब। संप्रदाय रहित तो कुछ ही लोग हो सकते हैं, सभी नहीं हो सकते। इसलिए एक तरफ ये खिंचते हैं तो वे सामने की तरफ होते ही हैं। और जहाँ *खेंच* है वहाँ स्याद्वाद वाणी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कई संत धर्म में *खेंच* रखने के लिए मना करते हैं।

दादाश्री : उनके मना करने से कुछ नहीं होता न! कॉलेज के बच्चे डायरेक्ट कॉलेज में ही आ सकते हैं? बीच के सभी स्टैन्डर्ड चाहिए। अत: मना करने से कुछ नहीं होगा। बच्चे तो डायरेक्ट कॉलेज में कैसे आ सकते हैं? उसका तरीका तो है न! अर्थात् जहाँ संप्रदाय न हो वहाँ कुछ भी डेवेलप ही नहीं हो सकता।

धर्मों का हेतु क्या?

प्रश्नकर्ता : इन सभी धर्मों का हेतु तो मोक्ष ही है न?

दादाश्री : लेकिन कई धर्म तो मोक्ष समझते ही नहीं हैं। उसके बावजूद सभी धर्मों का हेतु क्या है? कि दु:ख न हो और सुख ही रहे, ऐसा ढूँढ़ते हैं। हर एक जीव को दु:ख पसंद नहीं है, उसे सुख ही पसंद है। और वह सुख भी फिर आधा अधूरा नहीं, हमेशा के लिए रहे, ऐसा चाहिए। यानी धर्म क्या कहता है कि 'भाई, आप धर्म करोगे तो आपको हमेशा का सुख मिलेगा।' यानी सभी धर्मों का एक ही कहना है। अब, हमेशा का सुख कैसे मिल सकता है? जब खुद की मुक्ति हो जाए तभी हमेशा का सुख मिलेगा।

जहाँ 'व्यू पोइन्ट', वहाँ 'रिलेटिव धर्म'

रिलेटिव धर्म, वे क्या हैं? डिफरन्ट व्यूज़ (अलग-अलग दृष्टिबिंदु) हैं। क्योंकि ये सभी डिग्रियाँ डिफरन्ट (अलग-अलग) हैं। तीन सौ साठ डिग्री पर पूरे जगत् के लोगों की बिलिफें हैं। वह ज्ञान नहीं है, बिलीफ है। उन्हें जैसा दिखाई देता है वैसा वे बोलते हैं। व्यू पोइन्ट! हर कोई अपने दृष्टिबिंदु को ही प्रस्तुत करता है। 'मैं जो कहता हूँ, वही सही है', ऐसा कहता है।

प्रश्नकर्ता : हर कोई, लोगों की दृष्टि से सोचने के लिए तैयार ही नहीं है, ऐसा है न?

दादाश्री : वह ऐसा ही समझता है कि मैं जो देख रहा हूँ, वही सही है, बाकी सब गलत है, इस दुनिया का। उसे भान नहीं है कि इससे भी उच्च प्रकार का दर्शन होता है। और हर एक को ऐसा ही लगता है कि मैं जो देख रहा हूँ वही सही है। क्योंकि उसे दिखाई देता है। जबकि

स्याद्वाद में तो किसी को कोई अड़चन ही नहीं है, उसे झगड़ा ही नहीं होता न! क्योंकि, धर्म के सभी प्रमाण हैं तीन सौ साठ डिग्री के, लेकिन एक भी डिग्री का प्रमाण न दुभे, सभी के प्रमाण को किंचित्मात्र अड़चन न हो ऐसी वाणी, उसे स्याद्वाद वाणी कहते हैं।

सेन्टर में होता है अनेकांत

पूरा जगत् एकांतिक है। कोई कहता है, 'हमारी एक सौ अस्सी डिग्री सही है।' कोई कहता है, 'हमारी एक सौ साठ डिग्री सही है।' और वह भी फिर जब मतभेद होता है तब हर कोई अपना ही सही है, कहता है। जबकि यह अनेकांत क्या कहता है? 'सभी का सही है।' सारी तीन सौ साठ डिग्री हमें मान्य है। क्योंकि मैं सेन्टर में बैठा हुआ हूँ। पूरा जगत् तीन सौ साठ डिग्री के व्यू पोइन्ट में ही पड़ा हुआ है। मेरे लिए सभी व्यू पोइन्ट, सभी 'रेडियस' समान ही हैं। हमारे लिए 'चेन्ज' (असमान) ही नहीं है न! किसी के साथ हमारी कुछ भी दखलंदाज़ी नहीं है न! पूरे 'वर्ल्ड' के साथ हमारा मतभेद नहीं है। कोई गाली दें फिर भी मैं कहता हूँ, 'उपकारी हैं, आइए, बैठिए!'

मुझ से किसी ने कहा हो कि 'आप चोर हैं दादा', तो आप सभी नाराज हो जाएँगे कि 'दादा को भला चोर कहने वाला कहाँ से आया?' लेकिन मैं नाराज नहीं होऊँगा। मैं कहूँगा कि, 'भाई, तू बता अब, मैं किस तरह से चोर हूँ, वह मुझे तू समझा।' तब वह कहेगा, 'दादा, आपके कोट के पीछे लिखा है कि दादा चोर है।' तब मैं कहूँगा कि, 'करेक्ट बात है।' मैं देख लेता हूँ। बात कुछ गलत है? उसने देखा तभी वह बोल रहा है न! बिना वजह ही मार-पीट करें, उसका क्या अर्थ है? किसी का गलत नहीं होता। वर्ना, बिना वजह वह बोलता ही क्यों? कुछ भी दृष्टि में आया होगा। किसी ने कुछ कहा होगा और उसकी दृष्टि में आया होगा, ऐसा भी हो सकता है। वह कहेगा कि, 'मुझ से ये फलाने कह रहे थे।' तब मैं कहूँगा, 'करेक्ट बात है। बात करेक्ट ही है लेकिन वह तुम्हारी दृष्टि से करेक्ट है।' गलत बोलता ही नहीं है कोई, सच ही बोलता है। उसे जैसा दिखाई देता है वैसा ही बोलेगा न! लेकिन 'दादा चोर हैं', ऐसा कहे तो चिढ़ना मत। यह तो दुनिया है! सभी तरह के स्वाद न हो तो दुनिया कहलाएगी ही नहीं न!

वादी-प्रतिवादी को भी मान्य

यह 'अक्रम विज्ञान' है, अर्थात् तुरंत ही काम करने वाला, ऑन द मोमेन्ट! हम तो अब मोक्ष के लिए पंथ से बाहर निकल गए। सांप्रदायिक मत अर्थात् क्या? पंथ। और यह तो वैज्ञानिक है, वैज्ञानिक धर्म।

प्रश्नकर्ता : अनेकांत।

दादाश्री : हाँ, अनेकांत! यानी प्रतिवादी भी कबूल करता है और जज भी कबूल करता है। सर्वमान्य है। लेकिन जहाँ समझ न हो, वहाँ शायद मान्य न भी हो।

प्रश्नकर्ता : भले ही न मानो, लेकिन वाणी तो किसी को न चुभे ऐसी होती है।

दादाश्री : वह प्योर होती है। वहाँ संबंध या कुछ नहीं होता न!

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद में विवाद होता है?

दादाश्री : नहीं। ऐसा है, अब यदि स्याद्वाद न हो तो संवाद होगा। संवाद में से वाद होता है, वाद में से विवाद होता है। कोर्ट में विवाद करते हैं न? ऐसा सब हो जाता है।

और स्याद्वाद वाणी अर्थात् प्रमाण वाणी! उसे वादी और प्रतिवादी दोनों कबूल करते हैं। प्रतिवादी भी ऐसा कहता है कि, 'आपकी बात सही है, लेकिन हमें मानना नहीं है, साहब।' उसे स्याद्वाद कहते हैं। और तभी काम होता है। स्याद्वाद वाणी के बिना काम नहीं होता। एक तरफी वाणी हो, वादी तरफी वाणी हो, वह ऐकांतिक हो गई, ऐसा कहा जाएगा। जिस वाणी के प्रमाण को मान्य किया जाता है, वह स्याद्वाद वाणी है! प्रतिवादी भी कहता है कि 'सही बात है' और वादी तो कहता ही है।

प्रमाण, जिसे अपने लोग कहते हैं न, कि आपकी बात तो प्रमाण है! वीतराग वाणी सप्रमाण होती है, प्रमाण स्वीकार किया जाता है। सामने वाला भी कहता है, 'आपने कहा तो हमें कबूल है। अब, हमें और कोई विचार करने की ज़रूरत नहीं है।' उसे प्रमाण कहा जाता है। उसे वीतराग वाणी कहते हैं। और यदि हमें प्रमाण न लगे तो समझ जाना कि यह वीतराग वाणी नहीं है, पक्षपाती वाणी है। वीतराग वाणी किसे कहते हैं? वह वाणी जो वादी-प्रतिवादी दोनों को कबूल हो। धन्य है उस वीतराग वाणी को!

और हमारी बात तो वीतराग है न! अर्थात् वादी और प्रतिवादी दोनों कबूल करते हैं। फिर उसका आराधन करना या आराधन नहीं करना, वह अलग बात है। लेकिन ऐसा तो वह कहता ही है कि 'बात सही है'। सिर्फ, वादी ही कबूल करे, वह राग-द्वेष वाली बात कही जाती है। वर्ना, वादी-प्रतिवादी दोनों एकमत नहीं हो सकते। यह विरोध पार्टी और सामने वाली पार्टी एकमत हो सकती हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं हो सकती।

दादाश्री : अब, मैं वहाँ जाकर बोलूँ तो दोनों पार्टी कबूल करेंगी। लेकिन फिर विरोध वाले क्या कहेंगे? 'हमें विरोध तो करना पड़ेगा। आपकी बात सही है, लेकिन हमारी तो विरोध पार्टी है इसलिए हमें विरोध करना ही पड़ेगा।' तब मैं कहूँगा कि, 'विरोध करना'। यानी कि वे अपने स्वभाव अनुसार करते हैं। लेकिन मुँह से कहते हैं, कि आपकी बात सही है। क्योंकि जिनमें आत्मा है और जो मनुष्य हैं, उन्हें तो बात तुरंत समझ में आ ही जानी चाहिए। गारन्टीपूर्वक! क्योंकि हमारी बात आत्मा कबूल किए बगैर नहीं रहेगा। अत: जिसे आत्मा ने कबूल की, उसे वादी और प्रतिवादी दोनों कबूल करेंगे और वीतरागी वाणी, उसे भगवान ने प्रमाण कहा है।

वीतराग वाणी, आवरण भेदी

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि, वीतराग वाणी सामने वाले का आत्मा कबूल करता है। तो आत्मा कबूल करता है या अंत:करण कबूल करता है?

दादाश्री : आत्मा।

प्रश्नकर्ता : मूल आत्मा या प्रतिष्ठित आत्मा? कौन सा आत्मा कबूल करता है?

दादाश्री : अपनी जो प्रज्ञा है न, वह कबूल करती है। और अंत:करण कबूल करे ऐसी बात हो तो उसे 'मन' कबूल करता है। और उससे मस्ती आती है, अन्य कुछ नहीं होता। पूरा जगत् मस्ती में ही पड़ा हुआ है। और यदि यह प्रज्ञा कबूल करेगी तो आनंद उत्पन्न होगा। इसलिए मैं कहता हूँ न, आत्मा को कबूल करना ही पड़ेगा। उसके बगैर मानना नहीं। फॉरेन वालों को भी कहता हूँ न, कि आत्मा को कबूल करना पड़ेगा, जिनमें आत्मा है, उन्हें यह कबूल करना ही पड़ेगा, मनुष्य के रूप में होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जिन्होंने 'ज्ञान' नहीं लिया हैं, उनमें प्रज्ञा कहाँ से होगी?

दादाश्री : उनमें प्रज्ञा नहीं होती। लेकिन उनको उतने समय के लिए यह वाणी आवरण भेदकर ठेठ आत्मा को 'टच' (स्पर्श) करती है। क्योंकि यह आवरण भेदी वाणी है।

वीतराग वाणी से आत्मतृप्ति

प्रश्नकर्ता : वीतराग वाणी पर कुछ प्रकाश डालिए।

दादाश्री : वीतराग वाणी अर्थात् सचेतन वाणी कही जाती है। यह तुरंत ही हमें सचेत कर देती है। भीतर की सभी मशीनरी शुरू कर देती है। अन्य वाणी कुछ नहीं करती। वह (अन्य) वाणी और हवा-पानी दोनों समान हैं।

यदि वीतराग वाणी सुनने को मिले तो दुःख चला जाता है, वर्ना दुःख नहीं जाता। वीतराग वाणी किसे कहते हैं? कि जिस वाणी को फरियादी और आरोपी दोनों कबूल करें कि यह बात सही है। मुझे मानना है-नहीं मानना है, वह अलग बात है। लेकिन यह बात सही है। हम उससे पूछें कि 'भाई, तुझे क्या लगता है? यह बात गलत है?' तब वह कहता है, 'नहीं! बात सही है लेकिन मुझे नहीं मानना है।' चाहे किसी भी कोम का हो, किसी भी जाति का हो, किसी भी गच्छ का हो, फिर भी एक्सेप्ट करता है कि भाई, बात सही है। फिर न मानना, वह अलग बात है। किसी का किसी पर अधिकार नहीं है। लेकिन बात तो तुरंत समझ में आ जाती है।

रागी-द्वेषी वाणी हो तो सभी कबूल नहीं करेंगे। फिर लोग नहीं कहते कि मेरा बेटा मेरा कहना नहीं मानता। उसका क्या कारण है? राग-द्वेष है। बाहर के लोग अपना न मानें लेकिन बेटे को तो अपना मानना ही चाहिए न? लेकिन राग-द्वेष की वजह से नहीं मानता।

खुद का आत्मा कबूल करें, वही वीतराग वाणी है। हम इतना ही कहते हैं कि तेरा आत्मा कबूल करे तभी सुनना, वर्ना आत्मा कबूल न करे और मन का कबूल किया हो, वह तो मनोरंजन कहलाएगा।

इस जगत् में बाहर जो सुनोगे, वह बुद्धिशालियों की वाणी है। उससे मन को संतोष होगा जबकि यहाँ आत्मतृप्ति होगी। क्या मन का संतोष और आत्मतृप्ति में फर्क है?

प्रश्नकर्ता : अवश्य, बहुत फर्क है।

दादाश्री : तो यहाँ सीधी आत्मतृप्ति हो जाए, ऐसा है। जब तक 'मैं कुछ जानता हूँ', तब तक वह अंदर प्रवेश नहीं करने देता।

स्याद्वाद वाणी से दुःखों का अभाव

वाणी हमें मधुरी-मीठी लगे, सुनते ही रहने का हमारा मन करे और उसे सुनने से ही भीतर के पाप का जो ढ़ेर है न, वे सब भस्मीभूत कर दें। ऐसी वाणी कभी सुनी है? सिर्फ तीर्थंकरों के समय में सुनी है।

आत्यंतिक दुःख का अभाव कहाँ होता है? जब उसे स्याद्वाद वाणी सुनने को मिलती है तब आत्यंतिक दुःख का अभाव होता है। वर्ना जगत् ने ऐसा देखा ही नहीं है न! ऐसा सुना ही नहीं है न, कि इस संसार का सारा दुःख चला जाता है! इस संसार के दुःख निकालने के लिए वीतराग वाणी के बिना अन्य कोई उपाय नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी वीतराग वाणी ही स्याद्वाद हो सकती है?

दादाश्री : बस, यही! वीतराग वाणी ही

स्याद्वाद है। और स्याद्वाद वाणी के अलावा किसी का भी पूर्ण रूप से कल्याण नहीं हुआ है, आत्यंतिक कल्याण नहीं हुआ है।

किसी को दखल न हो, वह है स्याद्वाद वाणी

व्यवहार शुद्धि के बगैर स्याद्वाद वाणी नहीं निकल सकती। व्यवहार शुद्धि पहले होनी चाहिए। व्यवहार शुद्धि अर्थात् बाहर की शुद्धि चाहिए। बाहर कुछ भी क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होने चाहिए, तो व्यवहार शुद्ध होगा न! व्यवहार में क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होने चाहिए, डिस्चार्ज में भी।

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज में भी नहीं होने चाहिए।

दादाश्री : हाँ, तभी यह स्याद्वाद वाणी निकलेगी।

स्याद्वाद किसे कहते हैं कि उस बात से अपने शरीर में भी कोई विरोध न उठाए, मन विरोध न उठाए, बुद्धि-चित्त-अहंकार कोई भी विरोध न उठाए! वर्ना अन्य वाणी बोलते हैं न, तो अपने शरीर में भी कहते हैं, 'ऐसा क्यों बोलते हो? ऐसा क्यों बोल रहे हो?' भीतर से परेशान करते हैं। नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अंदर से।

दादाश्री : वर्ना 'अच्छा बोल रहे हो, हाँ अच्छा बोल रहे हो', ऐसा कहते हैं।

स्याद्वाद वाणी क्या कहती है? आप ऐसा बोलो कि पाँच लोगों को लाभ मिले और किसी को भी दखल न हो।

ममता रहित स्याद्वाद वाणी

इन (अन्य) सभी वाणीओं में अहंकार होता है। जहाँ ममता वहाँ वीतराग वाणी नहीं होती। कुछ भी ममता है, वहाँ वीतराग वाणी नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : समता हो, वहाँ होती है।

दादाश्री : ममता ही न हो तो वीतराग वाणी होती है। ऐसी समता वाले तो बहुत साधु देखे हैं, लेकिन ममता छूटी नहीं होती है। जब ममता छूटेगी तब वीतरागता आएगी। समता तो, अड़चन नहीं होती इसलिए रहती है। इस कुत्ते को भी रात को दो पूरियाँ खिलाएँ न, तो पूरी रात आराम से समाधि में रहेगा। ऐसी समता नहीं चलेगी। उनमें ज़रा भी ममता नहीं चाहिए। किसी भी कोने में पड़ी हुई ममता नहीं चलेगी।

यह (हमारी) वीतराग वाणी है कि जिसका मालिक नहीं है, जिसमें राग-द्वेष नहीं है। एक घंटा सुनें तो भी कल्याण हो जाता है। राग न हो और एक घंटा अच्छी तरह से सुने तो भी कल्याण हो जाता है। यह स्याद्वाद वाणी है!

वीतराग वाणी, उसकी परीक्षा अन्य किस तरह से कर सकते हैं? इसी रूप में प्रमाणभूत कही जाती है। प्रमाण! अन्य वाणी प्रमाण नहीं कही जाती, यह वाणी ही प्रमाण कही जाती है! इसलिए भगवान ने कहा है कि वीतराग वाणी सर्वमान्य होती है। उसे लोग प्रमाण, प्रमाण, प्रमाण कहते हैं! दुश्मन भी ऐसा कहता है कि, 'नहीं, बात सही है दादा की!' यह वीतराग वाणी है। राग-द्वेष वाली बात को कोई एक्सेप्ट करने को तैयार नहीं होता। खुद को भी अच्छी नहीं लगती न! वह राग-द्वेष वाली बात होती है न, तो बोलने वाला खुद भी एक्सेप्ट नहीं करता न! कहता है, 'ऐसी क्यों निकल रही है?' वह खुद ही एक्सेप्ट नहीं करता तो दूसरा कौन एक्सेप्ट करेगा? वीतराग वाणी में कोई कमी नहीं निकालता, सब बिल्कुल चुप!

मोक्ष के लिए चाहिए वीतराग वाणी

मोक्ष के लिए तो 'वीतराग वाणी के अलावा और नहीं कोई उपाय!' दूसरी सभी रागी (राग वाली) वाणी होती है। वीतराग वाणी अर्थात् स्यादवाद, किसी जीव का प्रमाण न दुभे। फिर भले ही कसाई आए, पर वह भी उसके धर्म में ही है। वीतराग की दृष्टि से कोई एक घड़ी के लिए भी धर्म से बाहर नहीं जाता है। धर्म के बिना तो कोई एक क्षण भी जी ही नहीं सकता, फिर भी अधर्म घुस जाता है। नास्तिक होता है वह भगवान में नहीं मानता, धर्म में नहीं मानता, परंतु अंत में नीति में मानता है, और नीति वह तो सबसे बड़ा धर्म है। नैतिकता के बिना धर्म ही नहीं है, नैतिकता तो धर्म की नींव है। जो भगवान को नहीं मानता, वह भी धर्म में ही है। धर्म के बिना तो कोई है ही नहीं। आत्मा है तो धर्म होना ही चाहिए। हर एक मनुष्य धर्म में है! हाँ, लेकिन साथ में अधर्म भी होता है!

प्रश्नकर्ता : साधक किसी भी धर्म का ठीक से पालन करे तो वह मोक्ष तक पहुँच जाएगा न?

दादाश्री : साधक तो पक्षपाती है और भगवान कौन से पक्ष के होंगे? निष्पक्षपाती होंगे न वे?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : पक्ष में पड़े हुए का मोक्ष कभी भी नहीं होगा। हाँ, भौतिक सुख मिलेंगे। मोक्ष 'स्टैन्डर्ड' वाले को नहीं मिलता। 'आउट ऑफ स्टैन्डर्ड' होंगे तभी मोक्ष मिलेगा। यहाँ पर 'यह' 'स्टैन्डर्ड' से बाहर है। यहाँ सभी आते हैं, मुस्लिम, जैन, वैष्णव सभी आते हैं!

ये अलग-अलग धर्म हैं :- जैन धर्म, वैष्णव धर्म, शैव धर्म, मुस्लिम धर्म, वे सभी 'रिलेटिव' धर्म हैं। इसमें एक भी 'रियल' धर्म नहीं है। 'रिलेटिव' धर्म अर्थात् आपको 'डेवेलप' कर देता है, पर उसमें से 'फुल डेवेलप' नहीं हुआ जा सकता। और मोक्ष तो 'फुल डेवेलप' का ही हो सकता है। देह होने के बावजूद भी देह और आत्मा अलग रहे, उसके बाद ही मोक्ष होता है।

स्याद्वाद और अनेकांत 'एक्सेप्ट'

इस हिन्दुस्तान में जो सभी धर्म हैं, वे सभी पाक्षिक धर्म हैं। पाक्षिक अर्थात् दूसरों को अलग कहते हैं या नहीं कहते? 'यह हमारा और यह आपका' करते रहते हैं न?

प्रश्नकर्ता : वास्तव में तो वैसा नहीं है न! ये तो लोग करते रहते हैं।

दादाश्री : वास्तव में नहीं है। लेकिन मेरा कहना है कि जिस धर्म में लोग ऐसा करते हैं, तो वह धर्म पक्षपाती हुआ। वीतराग धर्म, वह निष्पक्षपाती धर्म है। और अपना यह भी वीतराग धर्म के स्टेज पर है और वीतराग धर्म का ही फाउन्डेशन है और यह स्याद्वाद है। तीर्थंकर भगवान की (संपूर्ण) स्याद्वाद वाणी होती है और हमारी स्याद्वाद वाणी में थोड़ी सी कमी होती है। बाकी, हम से तो, पच्चीस हज़ार लोग बैठे हो न, तो किसी का भी प्रमाण नहीं दुभता। यानी सभी को हमारी बात अच्छी लगे, ऐसी होती है। क्योंकि यहाँ यह कोई एक धर्म नहीं है कि इसकी स्थापना हो या दूसरे का खंडन-मंडन हो। यहाँ खंडन-मंडन कुछ नहीं होता। और हम तो इन सभी स्टैन्डर्ड को 'एक्सेप्ट' करते हैं।

अपने यहाँ तो सर्वधर्म परिषद है। भगवान निष्पक्षपाती हैं और यह भी निष्पक्षपाती है। यहाँ

कोई पक्षपात नहीं है। वेदांत का पक्षपात नहीं है, स्वामीनारायण का पक्षपात नहीं है, वैष्णवों का पक्षपात नहीं है, जैनों का पक्षपात नहीं है। यहाँ हर एक को अपने धर्म की ही बात कर रहे हैं, ऐसा लगता है। और सभी धर्म वालों को ऐसा ही लगता है कि ये मेरे हित की ही बात कर रहे हैं। किसी धर्म वाले को ऐसा नहीं लगता कि हमारे धर्म के विरुद्ध है। मुस्लिम धर्म वालों को भी नहीं लगता। यहाँ मुस्लिम बैठा हो, दूसरी किसी भी ज्ञाति के लोग बैठें हो, किसी को कुछ खराब नहीं लगता। किसी के मन में ऐसा नहीं लगता कि ये पक्षपाती बोल रहे हैं। सभी को अपने धर्म जैसा ही लगता है। क्योंकि हमारी वाणी अनेकांत है। अनेकांत अर्थात् क्या कि किसी भी व्यक्ति को वाणी अलग नहीं लगती, खराब नहीं लगती और सारे भाव वाली है अर्थात् हर एक को अपने-अपने भाव वाला मिल जाता है। इसलिए यहाँ हर एक धर्म वाले को अपने-अपने प्रमाण से सभी को लाभ होता है, खुद के व्यू पोइन्ट से लाभ होता है। यहाँ जैन भी हैं, वैष्णव भी हैं, बाकी सभी धर्म वाले भी यहाँ आते हैं। लेकिन उन सभी को खुद के धर्म से लाभ होता है।

यानी कि यहाँ तो किसी भी पक्ष वाला आए, किसी भी पंथ वाला आए, सभी पंथ वाले यहाँ इकट्ठें होते हैं, तो उन सभी को, मेरी वाणी अनुकूल हो जाती है। किसी को नुकसान नहीं होता, किसी को दुःख नहीं होता, हर कोई अपनी भाषा में समझ जाता है। क्योंकि हम निष्पक्षपाती हैं। हमारा सारा वातावरण ही बिल्कुल निष्पक्षपाती है, इसलिए किसी को अड़चन नहीं होती। जहाँ पर पक्षपात नहीं है और हर एक धर्म वाले दर्शन करते हैं, वहीं स्याद्वाद वाणी है। और तभी तो सभी दर्शन कर सकते हैं वर्ना, कोई नहीं करेगा।

और सच्चा मार्ग, वीतराग का मार्ग किसे कहते हैं? कि सभी ज्ञाति के लोग हों, उन सभी को वाणी खुद की ही है, ऐसा लगे। मैं अभी बोल रहा हूँ तो आपको आपकी वाणी लगेगी, इन ब्राह्मणों को ब्राह्मणों की वाणी लगेगी। जुदाई नहीं लगेगी। भगवान इसे स्याद्वाद कहते हैं, अनेकांतवाद कहते हैं। हम एक गाँव में गए थे। उस गाँव में कितने ही मत वाले लोग थे सभी। उसमें बीस जितने पटेल के घर थे, आठ-दस राजपूतों के घर थे और फिर देसाईयों के पाँच-सात घर थे। उन सभी के घर हम गए थे। पैंतीस जगह पर मुझे पधरावनी करनी पड़ी थी। लेकिन उस गाँव के एक भी व्यक्ति को जुदाई नहीं लगी। क्योंकि हमारा पद ऐसा है न, कि मैं वैष्णव के यहाँ जाऊँ तो मैं वैष्णव जैसा दिखाई देता हूँ। जैनों के घर थे न, वहाँ गया था, वहाँ तो मैं असली जैन जैसा दिखता था। फिर भी हमारा किसी के साथ पक्षपात नहीं है। जैन के प्रति भी पक्षपात नहीं है। हम सिर्फ, वीतरागता को ही स्वीकार करते हैं। वीतरागता! चौबीस तीर्थंकरों का धर्म, वीतराग धर्म और स्याद्वाद मार्ग और अनेकांत, हम इतना ही 'एक्सेप्ट' करते हैं।

एकांतिक को तो पूरा जगत् समझता है! लेकिन 'अनेकांत' को नहीं समझे। जब 'स्याद्वाद' को समझेंगे, तब फिर मोक्षमार्ग हाथ में आएगा।

भगवान का मार्ग समाधान का है। स्याद्वाद वाणी है, वहाँ आत्मज्ञान है। जहाँ एकांतिक वाणी है, वहाँ आत्मज्ञान नहीं है।

संप्रदाय से मोक्ष अलग है

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हिन्दुस्तान में कितने सारे पंथ हैं, परंतु सभी में स्वरूप के ज्ञान की बातें नहीं होती न?

दादाश्री : वे सभी अध्यात्म को मानने वाले हैं, लेकिन लो लेवल के हैं। अत: वहाँ आत्मा की बातें नहीं होती। वे करते तो हैं आत्मा की बातें, लेकिन उसमें कुछ एक्जेक्टनेस नहीं होती। वे तो सिर्फ इतना ही कहते हैं कि तू अविनाशी है और यह देह विनाशी है। ऐसी उसे प्रतीति करवाते हैं। फिर भी इतनी प्रतीति करें तब भी बहुत हो गया। मोक्ष की बातों को तो वेदांत में ऊपर के स्तर वाले स्वीकार करते हैं। ऊपर के स्तर वाले जो सांप्रदायिक नहीं हैं, वे लोग मोक्ष की बातें करते हैं। वेदांत मार्ग में जो संप्रदाय के बाहर है और जैन मार्ग में जो संप्रदाय के बाहर है, उनके लिए मोक्ष की बातें करनी है। और जो संप्रदाय में पड़े हुए हैं, उनके लिए मोक्ष नहीं है। वे एकांतिक कहलाते हैं। जबकि मोक्ष अनेकांत से होता है। एकांतिक में आग्रह होता है। आग्रह अर्थात् 'इतना ही धर्म, इससे विशेष धर्म नहीं', ऐसा आग्रह होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि हम तो अनेकांत को ही मानते हैं, हम अनेकांत की ही बातें करते हैं, एकांतिक बातें करते ही नहीं।

दादाश्री : वे तो शब्दों में ऐसा मानते हैं, शब्दों में इस तरह की बातें करते हैं। और ऐसा भी बोलते हैं कि हम स्याद्वाद बोल रहे हैं। अब उसमें, स्याद्वाद वाणी तो कभी कभार सिर्फ ज्ञानी की होती है या तीर्थंकर की होती है। अन्य किसी की वाणी स्याद्वाद नहीं होती। यदि ऐसी स्याद्वाद होती तो ये मतभेद नहीं होते, झगड़े नहीं होते।

स्याद्वाद वाणी अर्थात् क्या? किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न दुभे और अधर्म का भी प्रमाण न दुभे। यानी कि कोई चोरी कर रहा हो, उसका भी प्रमाण न दुभे, ऐसी वाणी बोलना। यदि चोर के प्रति द्वेष करते हों तो वह स्याद्वाद नहीं माना जाएगा। स्याद्वाद अर्थात् निराग्रही वाणी होती है। यदि स्याद्वाद वाणी हो तो चोर भी उनके पास एडवान्स (प्रगति करता) होता है, वहाँ पर सभी प्रगति करते हैं।

दोनों मार्गों से, वेदांत मार्ग से और जैन मार्ग से ऋषभदेव भगवान ने मोक्ष कहा है। दोनों ही समकित होने पर इकट्ठे होते हैं। सम्यक् दर्शन के स्टेशन पर दोनों मिल जाते हैं।

समझ सदा समाती है

अत: ये सभी रिलेटिव धर्म है। वे स्टैन्डर्ड धर्म है सारे। और अपना यह आउट ऑफ स्टैन्डर्ड है, और रियल धर्म है।

ज़्यादा समझ वाला कम समझ वाले के साथ झगड़ा न हो इस तरह से बरते, 'तेरा सही है', ऐसा कहकर निभा ले। वहाँ मानो खुद अभिभावक हो न, इस तरह अभिभावक जैसा रखना चाहिए कि 'आपका कहना ठीक है'। या तो उनसे इतना पूछना चाहिए कि 'आपको अपने धर्म से असंतोष है? आपके धर्म से आपको शांति नहीं रहती, असंतोष है, तो यहाँ पर आइए? वर्ना, वहाँ आपको संतोष रहता हो तो वहाँ उसे आप पूर्ण कीजिए।' यह अंतिम बात है, आउट ऑफ स्टैन्डर्ड है! इसलिए हम सभी स्टैन्डर्ड को कहते हैं, 'आप सभी *ऊपरी* है, हमसे आप सभी *ऊपरी* है।' तो उन्हें शांति लगती है। और यदि हम उनसे ऐसा कहें कि 'आपकी कोई कीमत नहीं, हमारा ऐसा और वैसा...' तो इसका कोई अर्थ नहीं है, यह बात मीनिंगलेस है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहते हैं उस समय उन्हें समभावी तो नहीं लगता न?

दादाश्री : समभाव तो उनमें होता ही नहीं

न! समभाव नहीं होता तभी तो वे 'हमारा करेक्ट है, पूर्ण है', ऐसा कहते हैं। खुद है स्टैन्डर्ड में और मानते हैं पूर्ण! लेकिन ऐसा मानना ही चाहिए। तभी उस स्टैन्डर्ड में रह सकते हैं वर्ना, नहीं रह सकते। इसलिए हमें ऐसा कहना चाहिए कि 'आपका ठीक है, सही है, पूर्ण है।' सभी धर्मों में समभावी होते हैं। यदि किसी धर्म में समभाव न हो तो फिर उसका स्वयंधर्म गलत है। क्योंकि सभी धर्मों का स्वीकार करना पड़ेगा। एक डिग्री से लेकर सभी डिग्री के धर्म स्वीकार करने पड़ेंगे। जो स्वीकार नहीं करते, वे डिग्री वाले धर्म है।

तब तक खिलौनों के ही खेल हैं

धर्म तो हर व्यक्ति का अलग-अलग होता है। अभी किसी एक धर्म के लोग इकट्ठें हुए हो, लेकिन सभी के व्यू पोइन्ट अलग होते हैं। अत: हर एक मनुष्य का धर्म अलग होता है। जब आत्मधर्म प्राप्त होता है तब वे सभी एक धर्मी होते हैं। तब तक सभी खिलौनों के धर्म है! खिलौनों से ही खेलते रहते हैं!

दस साल का लड़का हो, वह तीन साल का था न, तब जिन खिलौनों से खेलता था उन खिलौनों को अब रहने दिए हो और हम उससे पूछें कि 'इन खिलौनों का अब क्या करना है?' तो वह कहेगा, 'मुझे इनका क्या करना है?' और उन दिनों तो वह खिलौना टूट गया हो तो वह रोता था। अब क्यों नहीं रोता?

प्रश्नकर्ता : उसके उन खिलौनों का स्टैन्डर्ड पूरा अलग हो गया।

दादाश्री : हाँ, वह स्टैन्डर्ड उसका पूरा हो गया। दूसरे खिलौनों का स्टैन्डर्ड आया। वे खिलौनें न हो तो वापस रोएगा। फिर उससे आगे का स्टैन्डर्ड आता है। फिर 'जीवित गुड़िया ला दो', कहेगा। तो फिर उसकी शादी करवाते हैं। तब पूछे कि, 'अब कुछ तो शांति है न?' तब वह कहेगा, 'नहीं, अभी वह चाहिए न, बेटा।' अरे, इतने खिलौने हैं फिर भी अभी बेटे का खिलौना चाहिए? तब वह कहेगा, 'हाँ, वह भी चाहिए न!' यानी यह खिलौनों से ही खेलता रहता है! फिर इस तरफ शास्त्रों के खिलौनों से भी खेलता है। शास्त्र, पुस्तकें, गुरु के, शिष्य के, वे सभी खिलौने! वह आत्मा से नहीं खेलता। आत्मज्ञानी मिले बगैर आत्मा से किस तरह खेल सकता है वह? और आत्मा की रमणता शुरू हो गई तो पर-रमणता बंद हो जाएगी। भले ही देह रहा। देह, देह के धर्म में है। मन, मन के धर्म में है, बुद्धि, बुद्धि के धर्म में है। आत्मा, आत्मा के धर्म में है। फिर हर्ज क्या है?

इसलिए यह 'ज्ञान' लेने के बाद हम आपसे कहते हैं न, कि 'व्यापार करना, उसमें कुछ हर्ज नहीं है।' जबकि दूसरे क्रमिक मार्ग वाले क्या कहते हैं कि, 'सबकुछ छोड़कर आ जाओ।' तब उसका मेल कैसे बैठेगा? और उसका लाभ कितने लोग उठाएँगे?

'यह' है अंतिम 'डिग्री' की बात

लोग कहते हैं, 'आप सभी को क्यों नहीं कहते?' सभी को नहीं कह सकते। एक डिग्री से तीन सौ साठ डिग्री तक के लोग हैं। सवा सौ डिग्री पर खड़े हुए व्यक्ति को समझाने के लिए सवा सौ डिग्री वाले की ही बात करनी पड़ती है। यहाँ मैं आप से बात कर रहा हूँ, ऐसी नहीं कर सकते। क्योंकि हर एक डिग्री के लोग अलग है। इसलिए यह बात सभी से नहीं कर सकते। यह तो अंतिम डिग्री की बात है। यह तो जिसका पालघर (मुंबई का उपनगर) आ गया हो न, उससे 'ये' सारी बातें करनी है।

बाहर जो बातें चलती है न, वे सभी गलत नहीं है। वह अपनी-अपनी सत्ता में सभी का करेक्ट है। इस जगत् में कोई ज़रा भी गलत नहीं है। सब अपनी सत्ता में, कोई पच्चीस डिग्री, कोई पचास डिग्री पर का, कोई अस्सी डिग्री पर का, वे सभी जो उपदेश दे रहे हैं, वे सभी सही हैं। और यह अंतिम डिग्री की बात है। वे जो है, वे सभी देहाध्यास बढ़ाने वाले हैं जबकि यहाँ देहाध्यास निकालना है। वहाँ अशुभ देहाध्यास निकालना है और शुभ को डालना है। अशुभ को निकालना और शुभ को पकड़ना! यह दखल कब तक रहेगा?

पक्ष में पड़े हुए, परमात्मा प्राप्त नहीं करते

भगवान का पाक्षिक धर्म नहीं था। यह तो कलियुग के असर की वजह से, दुषमकाल के असर की वजह से पाक्षिक हो गया है। वीतराग धर्म तो निष्पक्षपाती होता है, स्याद्वाद होता है। हमारी वाणी स्याद्वाद है। इसलिए हर एक को अनुकूल आती है और पक्षापक्ष वाली नहीं है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद वाणी अर्थात् किसी को भी न दुभाए, ऐसी वाणी?

दादाश्री : हाँ, किंचित्मात्र नहीं दुभाती और यह एकांतिक वाणी तो एक को आनंद करवाती है और एक को दुभाती है।

एकांतिक वाणी अर्थात् यह एक धर्म वाला बोले तो सामने दूसरे धर्म वालों को अच्छा नहीं लगता। एक पक्ष वाला बोले तो दूसरे पक्ष वालों को अच्छा नहीं लगता। इसलिए वे उठकर चले जाते हैं। उसे एकांतिक वाणी कहते हैं। वह पाक्षिक वाणी कहलाती है। वे सभी पक्षापक्ष वाली बातें कही जाती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वे सामने वाले पक्ष का खंडन करते हैं।

दादाश्री : नहीं! खंडन नहीं करते हों फिर भी वह वाणी ही ऐसी होती है कि सामने वाले को अलग ही लगती है। एक-एक शब्द समान हों फिर भी उसे अलग ही लगती है। अत: वाणी ऐसी बोलना चाहिए कि किसी का प्रमाण न दुभे। किसी के धर्म का प्रमाण न दुभे, ऐसा बोलना चाहिए। क्रिश्चियन धर्म हो या मुस्लिम धर्म हो या फिर कोई भी धर्म हो, स्थानकवासी हो या दिगंबरी हो, लेकिन ऐसा बोलना चाहिए कि किसी का भी प्रमाण नहीं दुभना चाहिए।

यहाँ पर हर एक धर्म वाले बैठें हैं। इनमें मुस्लिम हों, जैन हों, हिन्दू हों, पारसी हों तो किसी का भी दृष्टिबिंदु नहीं दुभे तब समझना चाहिए कि यह पाक्षिक वाणी नहीं है। यह वाणी सर्वपक्षी है। स्याद्वाद अर्थात् निष्पक्षपाती! यानी कि चाहे कुछ भी बोलें तब भी दिगंबरी को उल्टा असर नहीं होता, श्वेतांबरी को उल्टा असर नहीं होता, स्थानकवासी को उल्टा असर नहीं होता।

जहाँ पक्षपात वहाँ पूर्णता नहीं

प्रश्नकर्ता : पाक्षिक विचार सत्य को समझ सकते हैं?

दादाश्री : पक्ष ही सत्य नहीं है, तो पाक्षिक विचार सत्य को कैसे समझेंगे? इस वर्ल्ड में जो कोई एक अंश वाला है, वह सत्य को नहीं समझ सकता। सर्वांश वाला सत्य को समझ सकता है। जगत् एक अंश पर है, खुद अपने अंश पर है। जो सर्वांश है, वही सत्य को समझ सकता है। अर्थात् निष्पक्षपाती से मोक्ष है और पक्ष से संसार है!

जब तक पक्षपात है तब तक पूर्णता के अंश में भी नहीं है। जहाँ पक्षपात है वहाँ कर्ता है। पक्षपात से आत्यंतिक कल्याण नहीं होता लेकिन पाक्षिक कल्याण होता है।

जब तक पक्ष में पड़े हैं तब तक भगवान नहीं मिलते। जब तक पक्ष में है तब तक भगवान कभी भी नहीं मिल सकते, यह नियम ही है। भगवान का नियम ऐसा है कि जो पक्ष में पड़े हुए हैं, उनसे मुझे नहीं मिलना है। भगवान खुद ही निष्पक्षपाती है। जब निष्पक्षपाती भाव उत्पन्न होगा तब यह बात समझ में आएगी। पक्ष में पड़ा हो और संसार में पड़ा हो, इनमें क्या फर्क है? संसार एक पक्ष है, त्यागी का भी पक्ष है। जबकि भगवान निष्पक्षपाती है।

वीतरागों का विज्ञान कैसा है? निष्पक्षपाती है। निष्पक्षपाती किसे कहते हैं? कुछ लोग मंदिर को सँभालने वाले हों और दूसरे लोग जो तोड़ने वाले हों, ऐसे दोनों लोग इकट्ठें हो तो किसी के प्रति पक्षपात नहीं हो, उसे निष्पक्षपात कहते हैं। और लोग या तो जो मंदिर को सँभालते हैं, उनके पक्ष में पड़ेंगे या तो मंदिर तोड़ने वाले के पक्ष में पड़ेंगे। और द्वंद्व का स्वभाव कैसा है? कि संसार ही खड़ा कर देता है। और यदि यह वीतराग विज्ञान मिल जाए तो द्वंद्वातीत हो जाएगा। फिर उसे द्वंद्व नहीं रहेगा।

वीतरागों के विज्ञान को आज के साइन्टिस्ट कबूल करें, ऐसा है। फॉरेन के बाकी लोग नहीं समझ सकते। वीतरागों के विज्ञान को एक ही पक्ष वाले समझे और बाकी के लोग नहीं समझे, उसे कभी भी वीतराग विज्ञान नहीं कहा जाएगा न! वीतराग विज्ञान तो क्लियर है, निष्पक्षपाती है। साइन्टिस्ट जिसे एक्सेप्ट करते हैं, सभी लोग एक्सेप्ट करते हैं। लेकिन जिनका खुद का एक मत है, उन लोगों पर एक प्रकार के मत का आवरण आ चुका है। इसलिए वे लोग एक्सेप्ट नहीं करते, यह बात स्वाभाविक है। लेकिन जिनको आवरण नहीं आया है, जो पढ़ें-लिखें हैं, जिन्होंने किसी पक्ष में दखल दी ही नहीं है, उन्हें तो सब तुरंत ही समझ में आ जाता है कि यह दीये जैसी स्पष्ट बात है। क्योंकि उनका आत्मा 'क्लियर' होता है। उनमें समझने के लिए 'क्लियरन्स' होता है।

पक्षापक्ष से पर, वह सर्वमान्य

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारे अनुभव में ऐसा आया है कि एक सुनने वाला जैन हो, एक सुनने वाला वेदांती हो या किसी और धर्म वाला हो, लेकिन दादा की वाणी से सभी का समाधान होता है।

दादाश्री : हाँ, सभी का समाधान हो जाता है। यानी यहाँ एक वेदांती हो, एक जैन हो या दूसरे धर्म के हो, सभी का समाधान होता है। धर्म का प्रमाण किंचित्मात्र न दुभे, ऐसी वाणी होती है। उसे ही निष्पक्षपाती वाणी कहते हैं। वीतराग वाणी किसे कहते हैं? वह निष्पक्षपाती होती है। वीतराग वाणी में पक्ष नहीं होता है।

पक्षापक्ष से पर इसलिए सर्वमान्य होती है, किसी भी व्यक्ति को मान्य होती है यह। परंतु समझना हो तो, यदि नहीं समझना हो तो मान्य नहीं होती। जिसे समझना है उसे तो मान्य ही होती है।

अर्थात् यह मोक्षमार्ग है, अन्य कुछ नहीं है। जिन और जिनेश्वर को तो ये सभी स्वीकार करते हैं। जो जिन हुए, जिनेश्वर हुए, वे सभी निष्पक्षपाती थे। मुझे जिन माना जाता है और जो संपूर्ण है, उन्हें जिनेश्वर कहते हैं।

पक्षापक्ष से भी पर यानी कोई भी व्यक्ति आपत्ति नहीं उठाता। इसीलिए स्याद्वाद कहलाता है न! स्याद्वाद में पाक्षिक शब्द नहीं होते। और पक्ष वाले शब्द आए, पाक्षिक शब्द, तब हमेशा ही आपत्ति खड़ी होती है!

प्रश्नकर्ता : यानी कि विकल्प खड़े होते हैं सारे।

दादाश्री : नहीं। पक्ष अर्थात् अलग ही लगता रहता है, मेल ही नहीं हो पाता न!

तमाम दर्शन खुले 'ज्ञानी' के पास

हमें तो, भगवान महावीर क्या कहना चाहते हैं, वह बात समझनी है। पचास लोग बैठे हो तो पचास लोगों को असर हो जाए तो जानना कि भगवान महावीर की सही बात आज हुई। सभी का हृदय कबूल करता है। क्योंकि महावीर भगवान कहीं नहीं गए, काल बदल गया है। आप में बैठे हुए महावीर, वे कहीं भी नहीं गए।

अर्थात् वीतरागों का दर्शन जो मेरे दर्शन में आया है न, वह सारा मैंने दे दिया है सभी को और बचा हो वह भी थोड़ा-थोड़ा देता रहता हूँ। बाकी, दर्शन में तो पूरा ही आ गया है। पूरा 'अक्रम विज्ञान' सबकुछ आ गया है, चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान आ गया है।

प्रश्नकर्ता : पूरा जैनदर्शन, वह आपके दर्शन में आ चुका है?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ। लेकिन पूरा जैनदर्शन ही नहीं, पूरा मोक्षमार्ग दर्शन में आ गया है।

प्रश्नकर्ता : यानी आप कहते हैं कि निराग्रही का ही मोक्ष है!

दादाश्री : हाँ, निराग्रही का मोक्ष! जिन और जिनेश्वर, वे सभी निराग्रही थे। और मेरे पास भी वही है। आग्रह मैंने किसी चीज़ का रखा ही नहीं न! किसी भी प्रकार का आग्रही नहीं, *खेंच* (बात की पकड़) नहीं, कुछ भी नहीं। मोक्ष के विरोध की बात ही नहीं न! और ये तो आपने देखें हैं न, आग्रह?

प्रश्नकर्ता : हाँ, आग्रह देखे हैं न!

दादाश्री : तो उसे अनेकांत कैसे कह सकते हैं? अनेकांत अर्थात् किसी भी प्रकार का आग्रह नहीं। हर एक को स्वीकार करने वाला, किसी भी धर्म का प्रमाण न दुभे, उसे अनेकांत कहते हैं। एकांत आग्रही को पुसाता है।

ज्ञानवाणी तो मौलिक शब्दों में

प्रश्नकर्ता : यानी दादा का जो दर्शन है, वह किसी परंपरा में जैसा था, वैसा नहीं है।

दादाश्री : नहीं। मोक्षमार्ग है यह तो! जैनदर्शन हो तो जैन पारिभाषिक शब्द मुझे रखने पड़ेंगे। वे पारिभाषिक शब्द मैं कहाँ से लाऊँ? ये बातें तो मेरे ही शब्दों में है, यह प्योर मार्ग मेरे शब्दों में ही है।

और पारिभाषिक भाषा हो न, वह अनेकांत नहीं हो सकती। उस समय तो भगवान की खुद की अपनी भाषा में था। हाँ, पारिभाषिक भाषा में नहीं था। खुद का स्वतंत्र था।

प्रश्नकर्ता : पारिभाषिक भाषा तो एकांतिक ही होती है?

दादाश्री : ऐसा है न, भाषा बोलने वाले जो हैं न, जो ज्ञान है, वह उनकी खुद की भाषा में होना चाहिए। फिर भाषा वही की वही रह गई और लोग उनकी नकल ही करने लगे। इसलिए एकांतिक हो गया। पारिभाषिक नहीं करना है। अपनी भाषा निकालो, खुद का माल निकालो। आपने जो पचाया है, उसके पचने के बाद का जो माल है, उसे आप निकालो। ये तो दूसरों के शब्द नहीं चलेंगे। वर्ना, वह फिर एकांतिक हो जाएगा और पचा हुआ माल अनेकांत होता है!

दरअसल ज्ञानी तो शास्त्रों के शब्दों का

उपयोग नहीं करते, वह अपनी सादी भाषा में ही होते हैं। और वह उनकी अपनी वाणी होती है, वह उनकी खुद की अनोखी भाषा होती है। और वह सहज भाषा होती है, और फिर स्याद्वाद वाणी होती है!

प्रश्नकर्ता : कुछ लोग ऐसा कहते हैं, कि दादा ने जैन परंपरा स्वीकार की है। लेकिन आपके अनुभव की बात है तो फिर परंपरा कहाँ से रही?

दादाश्री : और यदि परंपरा होती तो मैं इस वेदांत का विरोधी हो जाता लेकिन ऐसा नहीं है। वे तो जैन वाले हमें जैन कहते हैं, वेदांत वाले वेदांती कहते हैं। वे जो कहते हैं वह सही। सभी का मुझे एक्सेप्ट है। लेकिन यह मोक्षमार्ग ही है, अन्य कुछ नहीं है। यह किसी की परंपरा नहीं है। लेकिन इसमें उपकार मोक्षमार्गी लोगों का है।

अपना यह स्याद्वाद मार्ग कहलाता है, अनेकांत मार्ग कहलाता है, अर्थात् जिन मार्ग कहलाता है, जिनेश्वर मार्ग कहलाता है। यह विज्ञान निष्पक्षपाती है, इसलिए सभी को एडजस्ट हो सकता है।

मूल बात तो हमेशा एक ही होती है

ये तो बहुत ऊँची कोटि का विज्ञान है और स्वतंत्र है! चौबीस तीर्थंकरों के विज्ञान जैसा स्वतंत्र है। परंतु ज्ञान वही का वही है, प्रकाश वही का वही है। लेकिन जवाब सभी चौबीस तीर्थंकरों से स्वतंत्र है! परावलंबन वाला नहीं है। जबकि वैसे चौबीस तीर्थंकरों ने यों अलग-अलग कहा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, अलग-अलग कैसे कहा होगा? वह बात तो एक ही होगी।

दादाश्री : भगवान महावीर ने कहा वह और पार्श्वनाथ भगवान ने कहा वह, दोनों अलग है। और नेमिनाथ भगवान ने कहा, वह अलग और ऋषभदेव भगवान ने कहा, वह अलग। सभी का अलग-अलग है! किस शास्त्र को सही मानें हम?

प्रश्नकर्ता : लेकिन वीतरागी विज्ञान तो एक ही होता है न?

दादाश्री : एक ही बाबत में मिलता हुआ आता था कि 'राग-द्वेष मत करो।' वह, सभी चौबीस तीर्थंकरों की बात समान ही है।

प्रश्नकर्ता : वह कॉमन है?

दादाश्री : वह कॉमन, उतना ही कॉमन है! 'आपका किया हुआ सब हम निभा लेंगे। आपको राग-द्वेष न हो, इतना ही हम कहना चाहते हैं कि राग-द्वेष मत करो।' इसमें कॉमन!

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है। लेकिन 'राग-द्वेष न हो', उसके लिए क्या-क्या करना है, वह अलग-अलग कहा है उन लोगों ने, ऐसा आपका कहना है?

दादाश्री : समय अनुसार ही बोलते हैं वे, जैसा समय! इस काल में अभी महावीर भगवान का शास्त्र चलता ही नहीं है, उसका क्या कारण है? इस समय में वह फिट नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मूल बात तो एक ही रहेगी न?

दादाश्री : मूल बात तो आत्मज्ञान है! आत्मा का, वह कॉमन है। बाकी अन्य सारी बातें समय के अधीन है। यानी देशकाल के अधीन है। अभी हम भगवान की बात रूपक में लाएँ कि 'दया रखो, शांति रखो, समता रखो', तब लोग क्या कहते हैं? 'अरे, इस काल में ऐसा होता होगा?'

क्योंकि यह काल ऐसा है, इसलिए वह बात 'एडजस्ट' नहीं होती। अत: भगवान ने काल के अनुसार उपदेश दिया है।

पार्श्वनाथ भगवान ने चार महाव्रत दिए थे, फिर महावीर भगवान ने पाँच महाव्रत कर दिए। उन ढाई सौ सालों में तो सारा परिवर्तन हो गया। और बाकी का भी बहुत सा परिवर्तन हुआ। क्योंकि वह तो काल के अनुसार बदलता ही रहता है। तो अब भगवान महावीर के बाद पच्चीस सौ साल बीत गए, अब, वह कैसे चलेगा?

इसलिए एक महाराज ने मुझे खुले दिल से कहा कि 'ये आपकी चौदह आप्तवाणी यदि छप जाए तो लोगों के लिए आधार रूप हो जाएगी।' क्योंकि अभी ये शास्त्र 'फिट' नहीं होते, समझ में नहीं आते और पारिभाषिक शब्द भी समझ में नहीं आते और मनुष्यों का सामर्थ्य भी नहीं है, ऐसा कर सकने का।

अक्रम विज्ञान है सैद्धांतिक

अब यह ज्ञान लुप्त नहीं होगा। चाहे जैसा भी करेंगे फिर भी अनावृत ही रहेगा यह। क्योंकि पूरा लुप्त हो चुका ज्ञान उत्पन्न हुआ है, यह। ज्ञान तो जो चला आ रहा था वही है, ज्ञान में फर्क नहीं है। स्वतंत्र सिद्धांत है, पूरा ही सिद्धांत! और सभी परतें अनावृत कर दी गई हैं, बहुत सी परतें लुप्त हो गई थी, वे सभी अनावृत कर दी गई हैं। अत: यह जो है, वह आउट ऑफ स्टैन्डर्ड कहलाता है। आउट ऑफ स्टैन्डर्ड अर्थात् विज्ञान कहलाता है। और विज्ञान अर्थात् मोक्षमार्ग कहलाता है।

और फिर यह विज्ञान बुद्धि की सुनता ही नहीं है, यह भी एक आश्चर्य ही है न, फिर। चाहे कैसे भी बुद्धिशाली हों उनकी सुनता ही नहीं है। सभी ज्ञान बुद्धि की सुनते हैं। बुद्धि, वह ज्ञान को तोड़ देती है। लेकिन यह विज्ञान तो बुद्धि की सुनता ही नहीं। बहुत से बुद्धिशाली आए थे वे बुद्धि से इसे यों 'ऐसा' करने गए। मैंने कहा, 'नहीं सुनेगा, यह आपकी बुद्धि कम पड़ जाएगी।' क्योंकि बुद्धि लिमिट वाली है और यह तो अनलिमिटेड विज्ञान है! अक्रम विज्ञान है यह तो! और वह क्रमिक मार्ग का ज्ञान तो बुद्धि की सुनता है। उसमें विरोधाभास भी होता है, क्रमिक मार्ग में। परंतु वह सापेक्ष विरोधाभासी होता है। और इस 'अक्रम' में विरोधाभास नहीं है। एक ही सिद्धांत है यह तो!

अपना विज्ञान तो चारों तरफ से मेल हो जाए, ऐसा है। अन्य जगह विरोधाभास मिलेगा लेकिन इसमें विरोधाभास नहीं मिलेगा। और यह तो एक्ज़ेक्टनेस है न! अठाईस सालों से इतने सारे प्रश्न पूछते हैं परंतु एक भी विरोधाभास शब्द इसके अंदर नहीं है।

बाकी, कोई पुस्तक लाओ तो मैं बता दूँगा कि चौथे ही पेज पर उसका विरोधभास मिलेगा। लेकिन पढ़ने वाले को पता नहीं चलता। ऐसी जागृति नहीं होती न! और मुझे तो पहले पेज पर क्या लिखा है, वह ध्यान में रहता है। यह वाक्य किसका साथ दे रहा है और किसका विरोध कर रहा है, वह दोनों मेरे ध्यान में होता है।

पहले पेज से लिखे, पहला वाक्य लिखे, उसे दूसरा वाक्य हेल्प करता है। पहले वाक्य को कौन हेल्प करता है? दूसरा वाक्य हेल्प करता है। दूसरे को कौन हेल्प करता है? तीसरा वाक्य। इस तरह पच्चीस पेज तक हेल्प वाला लिखकर ले आए। वह अविरोधाभास कहलाता है। जबकि जगत् की पुस्तकें कैसी होती है? पहले पेज पर

कुछ लिखा हो फिर आगे कुछ ऐसा वाक्य लिखते हैं कि पूरे पच्चीस पेज व्यर्थ हो जाते हैं। यानी वहाँ विरोधाभास होता है!

अत: यह अक्रम विज्ञान पूरा सैद्धांतिक स्वरूप से है। जहाँ से पूछो वहाँ से सिद्धांत में ही परिणमित होता है। क्योंकि यह स्वाभाविक ज्ञान है। कोई भी चीज़ जो ज्ञान में आ चुकी हो, वह चीज़ फिर से अज्ञान में नहीं जाती। हर एक के सिद्धांत को हेल्प करते-करते यह सिद्धांत आगे बढ़ता जाता है और किसी के भी सिद्धांत को नहीं तोड़ता। इसमें विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता।

वीतरागों का सिद्धांत

वीतरागों का सिद्धांत तो कैसा होता है? अविरोधाभास। आगे जो वीतराग हो चुके हैं, उनका ही सिद्धांत है यह। यह कोई नया ज्ञान उत्पन्न नहीं होता और पुराना चला नहीं जाता। वही का वही ज्ञान चलता रहता है।

सिद्धांत अर्थात्, जड़ भाव और चेतन भाव, जिन्हें भगवान ने देखा, उसे सिद्धांत कहते हैं। हाँ, जड़ और चेतन नहीं, जड़ भाव और चेतन भाव उनका ही अवलोकन किया था। बाकी भाव तो रहेंगे ही। उन भावों का भान ऐसे नहीं हो सकता भला!

ज्ञानी बंधे हैं खुलासे देने के लिए

अरब रुपए देने से, इनमें से एक अक्षर सुनने को नहीं मिलेगा। यह बुलबुला (ज्ञानी पुरुष) जब तक जीवित है तब तक काम निकाल लो, बाद में अक्षर भी सुनने को नहीं मिलेगा। इन सभी को तो जब पचेगा तब की बात है न! बाकी, पचना आसान नहीं है। खुद को फायदा हो जाएगा, सिद्धांत हाथ में आ जाएगा। लेकिन पचने के बाद उगे, वह तो बात ही अलग है न! उगेगा थोड़ा-बहुत लेकिन वह ऐसा नहीं उगेगा न! ऐसा अद्‌भुत नहीं उगेगा! थोड़ा बहुत तो उगेगा, हमारा आशीर्वाद है। हम आशीर्वाद भी देते हैं!

ज्ञानी की वाणी सुनते रहने से प्रकट होती है। ज्ञानी से सीधी वाणी डायरेक्ट सुनने से भीतर उसका पाचन होता है और तभी वह प्रगमित (विकसित) होती है। प्रगमित होने के बाद स्वयं ही स्वाभाविक रूप से उग निकलती है। यदि उसमें से समझदारीपूर्वक निहारते रहे तो! बाकी, उसे निहारने की ही ज़रूरत है।

यह सारी केवलज्ञानमय वाणी है। केवलज्ञान किसे कहते हैं? जहाँ बुद्धि एन्ड (समाप्त) होती है, जहाँ मतिज्ञान एन्ड होता है। जहाँ मतिज्ञान एन्ड होता है, वहाँ केवलज्ञान उत्पन्न होता है। वह प्रकाश केवलज्ञान से ही उत्पन्न हुआ प्रकाश है।

इसलिए यह दुनिया का एक आश्चर्य है!

पूछ-पूछकर समझ लो, ज्ञान को विस्तार से

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा प्रश्न होता है कि आपके परिचय में आकर, यहाँ पर हमें अब और क्या करना है?

दादाश्री : ऐसा है न, आपका जहाँ रूक गया हो, वह ज्ञान यहाँ जान लेना है। लेकिन ऐसा संयोग रोज़ नहीं मिलता। यह ज्ञान, यह वाणी ऐसी चीज़ नहीं है कि आप अभी निकालने जाओगे तो निकलेगी। क्योंकि यह वाणी, वह रिकार्ड है। जितनी रिकार्ड निकलनी है उतनी निकलेगी। अत: फिर जितना ज़्यादा टाइम के लिए आप यहाँ आओगे, तो तब वह बात निकलेगी। वह ज्ञान आपको उस दिन मिलेगा।

खुद की सेफसाइड के लिए समझ लेना है, यहाँ पर। हम जो कहते हैं न, वही पूरी तरह से समझ में नहीं आता, भला। खुद की छलनी होती है, उस अनुसार छानता है।

प्रश्नकर्ता : हम जितना समझते हैं, उसे सही मान ले तो फिर उल्टा नहीं होगा?

दादाश्री : सही नहीं मान सकते। खुद के मन में जितना लाभ हुआ उतना सही। और किसी को तो यह जवाब नहीं दे सकते।

प्रश्नकर्ता : किसी के लिए नहीं, खुद के लिए पूछ सकते हैं न?

दादाश्री : यहाँ सब खुद के लिए समझना है। लेकिन वह जितना समझ में आए उतना सही। जैसी छलनी होती है उस अनुसार समझ में आता है। अर्थात् खुद के लिए पूछताछ करके समझ लेना। 'यह क्या है, मुझे समझना है। मुझे ये अड़चन आई है।' वह सब समझ लेना।

इस ज्ञान को सूक्ष्मता से समझ लेना पड़ेगा। क्योंकि यह ज्ञान एक घंटे में दिया है। कितना बड़ा ज्ञान, एक करोड़ साल में जो ज्ञान नहीं हो सकता, वह ज्ञान एक घंटे में होता है! लेकिन बेसिक (सामान्य) होता है, उसे बाद में विस्तारपूर्वक समझ लेना पड़ेगा न? उसे विस्तार से समझने के लिए तो आप मेरे पास बैठोगे और पूछताछ करोगे, तब मैं आपको समझाऊँगा। इसलिए हम कहते हैं न, कि सत्संग की बहुत ही ज़रूरत है। जैसे-जैसे आप यहाँ पर आंकड़े पूछते जाओगे न, (वैसे-वैसे) वे आंकड़े भीतर खुलते जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : कुछ वाणी जो निकलती है न, उसे दोबारा समझने के लिए पूछ लेना चाहिए।

दादाश्री : वह तो जिसे चुभता हो, उसे पूछ लेना है। मेरे नीचे कंकड़ कहाँ से आ रहा है? बाकी, सभी को रास्ते पर चढ़ाना है न! जो पीछे छूट गया हो उसे भी।

नहीं है यह मेरी वाणी

प्रश्नकर्ता : आप जो वाणी बोलते हैं, वह बहुत ग़ज़ब की निकलती है।

दादाश्री : यह तो टेपरिकर्ड है न! मैं तो ज्ञाता-दृष्टा हूँ न! ग़ज़ब की वाणी निकलती है, उसे आपको जानना है! मुझे, ग़ज़ब की है या नहीं, ऐसा जानना ही नहीं होता न! यह टेपरेकर्ड है, उसमें मुझे क्या लेना-देना? इसमें मैंने क्या किया? हम तो वीतराग हैं। यदि इसमें मेरा कर्तव्यपन होता तो मुझे मिठास लगती। मैंने बोला होता तो मुझे मिठास लगती कि हाँ, कितना अच्छा बोला! आपको अच्छा लगा या नहीं लगा? ऐसा पूछता रहता। लेकिन देखो यह वाणी, मालिकी बगैर की वाणी तो देखो! एक घंटा सुनें न तो उसकी मुक्ति हो जाएगी, यदि सच्चे दिल से सुने तो!

वीतराग वाणी आत्मरंजन करवाने वाली होती है, आत्मा को शांत करती है। पक्ष वाली वाणी, वह मनोरंजन करवाने वाली होती है। वीतराग वाणी हमें ऐसी लगती है कि यह एक नई बात है। कभी भी सुनी न हो, ऐसी अपूर्व बात लगती है।

जगत् के लोग प्रमाण वाक्य किसे कहते हैं? जितनी वीतरागता उतना उसका वाक्य प्रमाण कहलाता है। जितने अंश की वीतरागता होती है, उसे जगत् के लोग प्रमाण वाक्य कहते हैं। अपने यहाँ कोई मध्यस्थी हो, वह मध्यस्थी भी कुछ अंश का वीतराग कहलाता है। फिर भी उसे प्रमाण कहा जाता है न! तो यह, वीतराग का तो धर्म

की बाबत में सभी तरह से कबूल किया जाता है। बाकी की सभी, हर एक बाबत में प्रमाण किया जाता है। अर्थात् जगत् के सभी लोग मान सके, ऐसी वाणी आ गई, अर्थात् सार पूर्ण हो गया।

यह वीतराग वाणी तो सबसे बड़ी औषधि है! सभी दु:खों को मिटाने की औषधि है! सभी दु:खों का क्षय करने का मार्ग है यह वीतराग वाणी।

भाव से डलते हैं स्याद्वाद वाणी के कॉज़ेज़

यानी वाणी, वह तो मूल चीज़ है। मनुष्य की वाणी बदलती नहीं है। उसे बदलने में तो बहुत टाइम लगता है। वाणी बदल जाए तब वह स्याद्वाद वाणी होती है। तब जगत् उन्हें कहता है, कि ये ज्ञानी पुरुष हैं। तब तक वाणी बदलती रहेगी। धीरे-धीरे भीतर जैसे-जैसे परमाणु बदलेंगे, वैसे वह वाणी खुद बदलती रहेगी। पहले माइल्ड होती-होती फिर मुलायम होती जाएगी, रेशमी होती जाएगी।

प्रश्नकर्ता : भाव ऐसे किए हों कि ऐसी स्याद्वाद वाणी प्राप्त हो, ऐसी मधुर वाणी प्राप्त हो, तो वह भाव ही वैसी वाणी का रिकॉर्ड तैयार करेगा न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। वाणी तो, हमें भाव से हर रोज़ ऐसी माँगनी चाहिए कि मेरी वाणी से किसी को भी दु:ख न हो और सुख हो। पर सिर्फ माँगने से ही कुछ होने वाला नहीं है। वैसी वाणी उत्पन्न हो, उसके 'कॉज़ेज़' करने पड़ेंगे। उससे वैसा फल आएगा। वाणी वह फल है। सुख देने वाली वाणी निकले, तब वह मीठी होती जाती है और दु:ख देने वाली वाणी कड़वी होती जाती है। फिर भैंस रम्भाए और वह रम्भाए, दोनों एक जैसा लगता है!

कलमों की भावना का फल, स्याद्वाद वाणी

इन '(नौ) कलमों' में हमने कुछ करने के लिए नहीं कहा। एक भी कलम में करने का शब्द आया हो तो, ऐसी कलम ढूँढ निकालो। यह अक्रम विज्ञान के आधार पर है।

प्रश्नकर्ता : ऐसी शक्ति दीजिए, तो शक्ति दीजिए ऐसा करना है न?

दादाश्री : नहीं, करना नहीं है। करना हो तो पता लगाकर, देखो। उस वाक्य की रचना कैसी है, कि कर्तापन का भीतर भाव ही नहीं आता।

मृदु-ऋजु भाषा करनी नहीं है। तू ऐसी भावना कर, कहते हैं। अभी वह कठोर बोल रहा हो उसके साथ हम मृदु-ऋजु बोलने जाए तो मूर्ख बन जाएँगे। कठोर के सामने कठोर निकलती हो लेकिन भावना यह करो, कहते हैं। भावना सबसे आसान चीज़ है, इससे अहंकार का कैफ नहीं चढ़ता और उसमें तो 'करो'। तो कहेगा, 'करूँ'। तो हो गया कर्ता।

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या यह बात सही है कि भाव करने से पात्रता बढ़ती है?

दादाश्री : सही पुरुषार्थ ही भाव है। ये (क्रिया) सारी कुछ नहीं है। यह कर्तापद तो बंधन पद है और यह भाव जो है, वह छुड़वाने वाला पद है।

प्रश्नकर्ता : भाव, वह छुड़वाने वाला पद है?

दादाश्री : हाँ! और कर्तापद सब बंधन पद है। 'ऐसा करो और वैसा करो और फलाना करो

और फलाना करो', इससे लोग बंध गए हैं न! वास्तव में दृढ़ता से बंध गए हो न? लोग बंधे हुए हैं, ऐसा आपने नहीं देखा है?

प्रश्नकर्ता : इस काल में अभी नौ कलमों की बहुत आवश्यकता है।

दादाश्री : इसलिए तो हम ये देते हैं सभी को।

प्रश्नकर्ता : ये 'नौ कलमें' पढ़ें तो, पढ़ते-पढ़ते ऑटोमैटिक उसमें समझ उत्पन्न हो जाए, ऐसा है।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि कोई भी व्यक्ति हो फिर भी उसे फिट हो जाए, ऐसा है।

इस काल के हिसाब से लोगों में इतनी शक्ति नहीं है। जितनी शक्ति है उतना ही दिया है। ये नौ कलमें हम आजीवन पालन करते आए हैं, यानी यह पूँजी है। अर्थात् यह हमारा रोज़मर्रा का माल है जो ज़ाहिर किया है। अंततः लोगों का कल्याण हो उसकी खातिर। कई सालों से, चालीस-चालीस सालों से निरंतर ये नौ कलमें प्रतिदिन (हमारे) भीतर चलती ही रही हैं। जो लोगों के लिए मैंने जाहिर (बताई) की हैं।

प्रश्नकर्ता : यह सब पढ़ा न, यह तो ज़बरदस्त बात है। छोटा आदमी भी अगर समझ जाए तो उसकी सारी ज़िंदगी सुखमय जाए।

दादाश्री : हाँ, बाकी समझने जैसी बात ही (आज तक) उसे नहीं मिली। यह पहली बार स्पष्ट समझने जैसी बात मिल रही है। अब यह प्राप्त हो जाए तो हल आ जाए।

प्रश्नकर्ता : जो उल्टा व्यवहार हो जाता है, उसके पीछे का कारण बदलने के लिए यह ज़बरदस्त उपाय है।

दादाश्री : बड़ा पुरुषार्थ है, ज़बरदस्त। यानी यह सबसे बड़ी चीज़ हमने बता दी, लेकिन अब लोगों को समझ में आ जाना चाहिए न! इसलिए फिर हमने अनिवार्य कर दिया कि इतना तो आपको करना है। भले ही समझ में न आए परंतु पी ले न, कहते हैं। अपने आप शरीर अच्छा हो जाएगा। भले ही, खाँसी है लेकिन तेरा शरीर तो अच्छा हो ही जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अंदर के सभी रोग खत्म हो जाएँगे, संसार रोग खत्म हो जाएगा।

दादाश्री : खत्म हो जाएगा।

पूरे संसार के सार के रूप में लिखा है सब। यह ऐसा है न, कि बच्चों के हाथ में मैंने रत्न दे दिया है। किसी समझदार के हाथ में गया हो न, तो यह देखकर कूदेगा। कूदते-कूदते पढ़ेगा कि मेरे धन्य भाग!

ये नौ कलमें क्या है? शास्त्र में नहीं है ये। हम जिनका पालन करते हैं, वह भी हमेशा ही हमारे अमल में ही हैं, वह आपको करने के लिए दे रहे हैं, शक्ति माँगने के लिए। इस अनुसार हमारा वर्तन होता है। हाँ, ये नौ कलमें, इससे पहले हम इनमें निरंतर बरतते थे। उसके बाद ज्ञान हुआ मुझे और बाद में अपने महात्माओं ने कहा, 'आपका कुछ दीजिए न!' तब मैंने कहा, 'मैं इनमें बरतता था, तभी मुझ में यह ज्ञान प्रकट हुआ।' उसके बाद यह बात निकली है।

हम स्याद्वाद वाणी माँगते हैं। ऐसी वाणी आपको धीरे-धीरे उत्पन्न होगी। मैं जो वाणी बोलता हूँ न, वह मुझे यह भावना करने का फल प्राप्त हुआ है।

जय सच्चिदानंद

दु:खदायी वाणी के करने चाहिए प्रतिक्रमण

भगवान के यहाँ सत्य और असत्य, दोनों होते ही नहीं हैं। यह तो यहाँ समाजव्यवस्था है। हिन्दुओं का सत्य, मुसलमानों का असत्य हो जाता है। और मुसलमानों का सत्य, वह हिन्दुओं का असत्य हो जाता है। यह सारी समाज-व्यवस्था है। भगवान के वहाँ सच्चा-झूठा कुछ होता ही नहीं। भगवान तो इतना कहते हैं कि, 'किसीको दु:ख हो तो हमें प्रतिक्रमण करना चाहिए।' दु:ख नहीं होना चाहिए अपने से। आप 'चंदूभाई' थे, वह इस दुनिया में सच है। बाक़ी, भगवान के वहाँ तो वह 'चंदूभाई' ही नहीं है। यह सत्य भगवान के वहाँ असत्य है।

संसार चले, संसार छुए नहीं, बाधक नहीं हो और काम हो जाए, वैसा है। सिर्फ हमारी आज्ञा का आराधन करना है। 'चंदूभाई' झूठ बोलें, तो भी अपने यहाँ हर्ज नहीं है। झूठ बोलें तो सामनेवाले को नुकसान हुआ। तो हम 'चंदूभाई' से कहें, 'प्रतिक्रमण कर लो।' झूठ बोलने का प्रकृति गुण है, इसलिए बोले बगैर रहेगा नहीं। झूठ बोलने के लिए मैं आपत्ति नहीं उठाता। मैं झूठ बोलने के बाद प्रतिक्रमण नहीं करो तो आपत्ति उठाता हूँ। झूठ बोलें और प्रतिक्रमण के भाव हों, उस समय जो ध्यान बरतता है, वह धर्मध्यान होता है। लोग धर्मध्यान क्या है, उसे ढूंढते हैं। झूठ बोल लिया जाए, तब 'दादा' के पास माफ़ी माँग लेनी चाहिए और फिर झूठ नहीं बोला जाए, वैसी शक्तियाँ माँगनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मानों कि जीभ से कहा, तो उसे मेरी तरफ से तो दु:ख हो गया कहलाएगा न?

दादाश्री : हाँ, वह दु:ख तो अपनी इच्छा के विरुद्ध हुआ है न, इसलिए हमें प्रतिक्रमण करना है। यही उसका हिसाब होगा, जो चुक गया।

प्रश्नकर्ता : हम कुछ कहें तो उसे मन में खराब भी बहुत लगेगा न?

दादाश्री : हाँ, वह तो सब खराब लगेगा। गलत हुआ हो तो बुरा लगेगा न। हिसाब चुकाना पड़ेगा, वह तो चुकाना ही पड़ेगा न। उसका दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अंकुश नहीं रहता, इसलिए वाणी द्वारा निकल जाता है।

दादाश्री : हाँ, वह तो निकल जाता है। पर निकल जाए उस पर हमें प्रतिक्रमण करना है, बस दूसरा कुछ नहीं। पश्चाताप करके, और फिर से 'ऐसा नहीं करूँगा', ऐसा निश्चय करना चाहिए।

फिर फुरसत मिले तब उसके लिए बार-बार प्रतिक्रमण करते ही रहना, ताकि सब नरम पड़ जाए। जो-जो कठिन फाइलें हैं, उतनी ही नरम करनी है, सिर्फ दो-चार फाइलें कठिन होती हैं, अधिक नहीं होतीं न!

प्रश्नकर्ता : अपनी इच्छा नहीं हो फिर भी क्लेश हो जाता है, वाणी खराब निकले तो क्या करें?

दादाश्री : वह अंतिम स्टेप्स (सीढियों) पर है। जब रास्ता पूरा होने आया हो न, तब हमें भाव नहीं हो तो भी गलत हो जाता है। तो हमें वहाँ पर क्या करना चाहिए कि पश्चाताप लें तो मिट जाएगा बस। गलत हो जाए तो इतना ही उपाय है, दूसरा कोई उपाय नहीं है। वह भी जब वह कार्य पूरा होने आया तब अंदर खराब करने का भाव नहीं होता है और खराब कार्य हो जाता है। नहीं तो वह कार्य अभी अधूरा होता है, हमें उल्टा करने का भाव भी होता है और उल्टा कार्य होता भी है, दोनों होते हैं।

प्रश्नकर्ता : हेतु अच्छा है तो फिर प्रतिक्रमण किसलिए करें?

दादाश्री : प्रतिक्रमण तो करना पड़ेगा, सामनेवाले को दुःख हुआ न। और व्यवहार में लोग कहेंगे न, देखो यह स्त्री कैसे पति को डाँटती है। फिर प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। जो आँख से दिखे, उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। अंदर हेतु आपका सोने का हो, पर किस काम का? वह हेतु काम नहीं आएगा। हेतु शुद्ध सोने का हो तो भी हमें प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। भूल हुई कि प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। इन सभी महात्माओं की इच्छा है, अब जगत् कल्याण करने की भावना है। हेतु अच्छा है, पर तो भी नहीं चलेगा। प्रतिक्रमण तो पहले करना पड़ेगा। कपड़ों पर दाग़ पड़े तो धो देते हो न? वैसे ये कपड़े के ऊपर के दाग़ हैं।

यह 'हमारा' टेपरिकॉर्डर बजता है, उसमें कुछ भूलचूक हो जाए तो हमें तुरन्त ही उसका पछतावा ले लेना होता है। नहीं तो नहीं चलता। टेपरिकॉर्डर की तरह निकलता है, यानी हमारी वाणी बिना मालिकी की है, तो भी हम पर जिम्मेदारी आती है। लोग तो कहेंगे न कि, 'पर साहब, टेप तो आपकी ही है न?' ऐसा कहेंगे या नहीं कहेंगे? क्या दूसरे की टेप थी? इसलिए वे शब्द हमें धोने पड़ते हैं। नहीं बोल सकते उल्टे शब्द।

प्रतिक्रमण तो अंतिम साइन्स है। इसलिए आपके साथ मुझसे कठोरता से बोल लिया गया हो, आपको बहुत दुःख नहीं हुआ हो फिर भी मुझे समझ लेना चाहिए कि यह मुझसे कठोरता से बोला ही नहीं जा सकता। इसलिए इस ज्ञान के आधार पर अपनी भूल पता चलती है। इसलिए मुझे आपके नाम का प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् वाणी बोलते समय, हमें अपने व्यू पोइन्ट से करेक्ट लग रहा हो, पर सामनेवाले को उसके व्यू पोइन्ट से करेक्ट नहीं लग रहा हो तब?

दादाश्री : वह सारी वाणी बिलकुल गलत है। सामनेवाले को फिट हो जाए, वह करेक्ट वाणी कहलाती है! सामनेवाले को फिट हो जाए वैसी हमें वाणी बोलनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम सामनेवाले से कुछ कह दें, अपने मन में अंदर कुछ भी नहीं हो उसके बावजूद भी हम उसे कहें तो उसे ऐसा लगता है कि 'यह ठीक नहीं कह रहे हैं, गलत है।' तो उसे अतिक्रमण कहा जाता है?

दादाश्री : उसे दुःख होता हो तो हमें प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। हमें उसमें क्या मेहनत लगनेवाली है? किसीको दुःखी करके हम सुखी नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में कोई गलत कर रहा हो, उसे टोकना पड़ता है। तो वह करना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : व्यवहार में टोकना पड़ता है, पर वह अहंकार सहित होता है। इसलिए उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : टोके नहीं तो वह सिर पर चढ़ेगा?

दादाश्री : टोकना तो पड़ता है, पर कहना आना चाहिए। कहना नहीं आता, व्यवहार नहीं आता, इसलिए अहंकार सहित टोकते हैं। इसलिए बाद में उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। आप सामनेवाले को टोको, तब सामनेवाले को बुरा तो लगेगा, पर उसका प्रतिक्रमण करते रहोगे तो छह महीने में, बारह महीने में वाणी ऐसी निकलेगी कि सामनेवाले को मीठी लगेगी।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

आसाम		
तिनसुकिया	दिनांक : 8 और 9 सितम्बर	संपर्क : 9954591264
गुवाहाटी	दिनांक : 10 सितम्बर	संपर्क : 9954821135
बक्सा	दिनांक : 11 सितम्बर	संपर्क : 8011249648
नलबाड़ी	दिनांक : 12 सितम्बर	संपर्क : 7002847355
बिहार		
पूर्णियाँ	दिनांक : 13 सितम्बर	संपर्क : 7488744604
कटिहार	दिनांक : 14 सितम्बर	संपर्क : 9931825351
मुजफ्फरपुर	दिनांक : 15 सितम्बर	संपर्क : 9939540790
पटना	दिनांक : 18 सितम्बर	संपर्क : 9431015601
छत्तीसगढ़		
भिलाई	दिनांक : 10 और 11 सितम्बर	संपर्क : 9407982704
रायपुर	दिनांक : 12 से 14 सितम्बर	संपर्क : 9179025061
बिलासपुर	दिनांक : 15 सितम्बर	संपर्क : 9425530470
दिल्ली		
दिल्ली	दिनांक : 11 सितम्बर	संपर्क : 9810098564
गोवा		
फोंडा	दिनांक : 15 सितम्बर	संपर्क : 8698745655
हरियाणा		
फरीदाबाद	दिनांक : 9 सितम्बर	संपर्क : 9891866841
सोनीपत	दिनांक : 12 सितम्बर	संपर्क : 9416509949
करनाल	दिनांक : 13 सितम्बर	संपर्क : 9996437267
अम्बाला	दिनांक : 14 सितम्बर	संपर्क : 7206367343
हिसार	दिनांक : 15 और 16 सितम्बर	संपर्क : 9896871690
झारखंड		
राँची	दिनांक : 27 सितम्बर	संपर्क : 8409706777
कर्नाटक		
बेंगलुरु	दिनांक : 9 से 12 सितम्बर	संपर्क : 9342530176
हुबली	दिनांक : 16 और 17 सितम्बर	संपर्क : 9513216111
बेलगाम	दिनांक : 18 सितम्बर	संपर्क : 9945894202
मध्यप्रदेश		
इन्दौर	दिनांक : 17 और 18 सितम्बर	संपर्क : 9893545351
उज्जैन	दिनांक : 19 सितम्बर	संपर्क : 9009796972

ग्वालियर	दिनांक : 20 सितम्बर	संपर्क : 9926265406
जबलपुर	दिनांक : 22 और 23 सितम्बर	संपर्क : 9893005078
भोपाल	दिनांक : 24 और 25 सितम्बर	संपर्क : 9826926444
	राजस्थान	
जयपुर	दिनांक : 17 और 18 सितम्बर	संपर्क : 8890357990
अजमेर	दिनांक : 19 सितम्बर	संपर्क : 9460611890
	उत्तर प्रदेश	
गाजियाबाद	दिनांक : 10 सितम्बर	संपर्क : 9968738972
झाँसी	दिनांक : 21 सितम्बर	संपर्क : 9415588788
बरेली	दिनांक : 22 सितम्बर	संपर्क : 8218313070
मैनपुरी	दिनांक : 23 सितम्बर	संपर्क : 9410632963
गोरखपुर	दिनांक : 24 सितम्बर	संपर्क : 9935949099
महाराजगंज	दिनांक : 25 सितम्बर	संपर्क : 9793353018
गोरखपुर	दिनांक : 26 सितम्बर	संपर्क : 9935949099
	उतराखंड	
हरिद्वार	दिनांक : 17 सितम्बर	संपर्क : 9719415074
ऋषिकेश	दिनांक : 18 सितम्बर	संपर्क : 7906691438
देहरादून	दिनांक : 18 सितम्बर	संपर्क : 9012279556
हल्द्वानी	दिनांक : 19 सितम्बर	संपर्क : 9412084002
काशीपुर	दिनांक : 20 सितम्बर	संपर्क : 9457635398
किच्छा	दिनांक : 21 सितम्बर	संपर्क : 9149347460
	पश्चिम बंगाल	
कोलकाता	दिनांक : 17 और 18 सितम्बर	संपर्क : 9831852764
रतुआ (मालदा)	दिनांक : 19 सितम्बर	संपर्क : 7908922840
मोस्ताफापुर (मालदा)	दिनांक : 20 सितम्बर	संपर्क : 6296466474
बानीपुर (जांगीपुर)	दिनांक : 21 सितम्बर	संपर्क : 9434532172
कांडी (मुर्शिदाबाद)	दिनांक : 22 सितम्बर	संपर्क : 9474076718

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

पर्युषण पारायण (आप्तवाणी-14 भाग-3)

23 अगस्त - पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम

24 से 31 अगस्त : सत्संग - सुबह 10 से 1, शाम 5 से 7-30 (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा.)

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती बुक के पेज नंबर 44 से वाचन होगा।

डल्लास : सत्संग - ज्ञानविधि :
ता. 1-2 जुलाई 2022

फिनिक्स : इंगलिश शिविर :
ता. 4 से 6 जुलाई 2022

फिनिक्स : गुरुपूर्णिमा महोत्सव : ता. 8 से 14 जुलाई 2022

अगस्त 2022
वर्ष-17 अंक-10
अखंड क्रमांक - 202

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

स्याद्वाद वाणी किसी को भी अड़चन न करे वैसी होती

'ज्ञानी पुरुष' की वाणी उल्लासपूर्वक सुनते रहें, उससे वैसी वाणी होती जाती है। सिर्फ नकल करने से कुछ नहीं होगा। सभी कर्मों का क्षय हो जाए, क्रोध-मान-माया-लोभ का क्षय हो जाए, तब स्याद्वाद वाणी निकलती है। आत्मा का स्पष्ट अनुभव हो चुका हो, तभी निकलती है, तब तक सारी बुद्धि की बातें, व्यवहार की बातें मानी जाती है। स्याद्वाद वाणी कब उत्पन्न होती है? अहंकार की भूमिका पूरी हो जाए तब। पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता है, कोई दोषित ही नहीं दिखाई देता! चोर भी हमें दोषित नहीं दिखाई देता। क्योंकि हर कोई अपने-अपने धर्म में है। किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दुभे, वह स्याद्वाद वाणी संपूर्ण होती है। हर एक की प्रकृति अलग-अलग होती है, फिर भी स्याद्वाद वाणी किसी की भी प्रकृति को अड़चन रूप नहीं होती।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.